शनिवार

18 जुलाई 2026

- देहरादून
- वर्ष 34
- अंक 175
- पृष्ठ 8
- मूल्य ₹ 1.00

34 साल से देहरादून का विश्वास

दून वैली मेल

सांध्य दैनिक

आर.एन.आई. : 59626/94

email: doonvalley_news@yahoo.com Website: dunvalleymail.com

डीएवीपी से मान्यता प्राप्त

जंतर-मंतर पर 'लोकतंत्र' की घेराबंदी

कार्यालय संवाददाता

नई दिल्ली। लोकतंत्र की सबसे बड़ी ताकत उसकी असहमति को सुनने की क्षमता मानी जाती है। लेकिन देश की राजधानी के जंतर-मंतर से जो तस्वीर सामने आई, उसने एक बार फिर यह सवाल

◆अस्पताल पहुंचे सोनम वांगचुक, आंदोलन स्थल खाली कराने से उठे सवाल
◆21 दिन के अनशन के बाद पुलिस ने सोनम वांगचुक को अस्पताल पहुंचाया
◆प्रदर्शनकारियों को हटाने की कार्रवाई से विपक्ष ने किया सरकार पर हमला

खड़ा कर दिया कि क्या देश में विरोध दर्ज कराने की लोकतांत्रिक जगह लगातार सिकुड़ती जा रही है? 21 दिनों से अनशन पर बैठे शिक्षाविद सोनम वांगचुक को पुलिस सफदरजंग अस्पताल ले गई और इसके साथ ही जंतर-मंतर पर चल रहे आंदोलन को हटाने की कार्रवाई शुरू हो गई। इस घटनाक्रम ने राजनीतिक और संवैधानिक बहस को तेज कर दिया है।

पुलिस का कहना है कि वांगचुक की तबीयत गंभीर हो रही थी और डाक्टरों की सलाह पर उन्हें अस्पताल ले जाना आवश्यक था। प्रशासन का तर्क है कि किसी भी व्यक्ति के जीवन की रक्षा उसकी जिम्मेदारी है। लेकिन आंदोलनकारियों का आरोप है कि यह केवल चिकित्सीय हस्तक्षेप नहीं, बल्कि आंदोलन की धार कुंद करने की कोशिश थी। उनके अनुसार, प्रदर्शनकारियों को हटाकर उस आवाज को कमजोर करने का प्रयास किया गया जो पिछले कई दिनों से सत्ता के सामने असहज सवाल खड़े कर रही थी।

जंतर-मंतर वर्षों से देश में लोकतांत्रिक विरोध का प्रतीक माना जाता रहा है। किसान आंदोलन हो, भ्रष्टाचार विरोधी अभियान हो या छात्र और सामाजिक संगठनों के प्रदर्शन यहीं से कई राष्ट्रीय बहसों ने जन्म लिया। ऐसे में किसी आंदोलन का इस तरह अचानक समाप्त होना स्वाभाविक रूप से राजनीतिक प्रश्न खड़े करता है। हालांकि यह भी उतना ही महत्वपूर्ण है कि यदि किसी अनशनकारी की हालत गंभीर हो जाए, तो प्रशासन पर चिकित्सा सहायता उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी भी होती है।

सवाल केवल इतना नहीं कि सोनम वांगचुक अस्पताल क्यों पहुंचे। बड़ा सवाल यह है कि क्या किसी आंदोलन की सबसे प्रभावशाली घड़ी वही होती है, जब उसे प्रशासनिक कार्रवाई का सामना करना पड़ता है? इतिहास बताता है कि कई बार आंदोलनों को रोकने की कोशिशों ने उन्हें और अधिक राष्ट्रीय बहस का विषय बना दिया।

विपक्ष ने इस कार्रवाई को लोकतांत्रिक अधिकारों पर चोट बताते हुए सरकार को घेरा है। दूसरी ओर सरकार समर्थक पक्ष का कहना है कि कानून-व्यवस्था बनाए रखना और किसी भी नागरिक की जान की रक्षा करना प्रशासन का दायित्व है। दोनों पक्ष अपने-अपने तर्क दे रहे हैं, लेकिन इस घटनाक्रम ने यह स्पष्ट कर दिया है कि असहमति और प्रशासनिक हस्तक्षेप के बीच संतुलन बनाना लोकतंत्र की सबसे कठिन परीक्षा है।

राजनीतिक दृष्टि से भी यह घटनाक्रम महत्वपूर्ण है। जब देश में युवाओं, परीक्षाओं, रोजगार और जवाबदेही जैसे मुद्दों पर बहस तेज है, तब किसी प्रमुख आंदोलन का इस तरह समाप्त होना स्वाभाविक रूप से सत्ता और विपक्ष के बीच टकराव को और तीखा करेगा। यह भी संभव है कि जंतर-मंतर से हटी आवाज अब संसद, अदालतों, सोशल मीडिया और देशभर के विश्वविद्यालयों तक और व्यापक रूप से पहुंचे। फिलहाल तस्वीर साफ है सोनम वांगचुक अस्पताल में हैं, जंतर-मंतर खाली कराया जा रहा है, लेकिन जिन सवालों को लेकर आंदोलन शुरू हुआ था, वह अभी भी देश की राजनीति और सार्वजनिक विमर्श के केंद्र में बने हुए हैं। लोकतंत्र की असली कसौटी अब यही होगी कि इन सवालों का जवाब संवाद से मिलता है या टकराव से।

प्रधानाचार्य की चाकू से गोद कर हत्या!

हमारे संवाददाता

बागेश्वर। प्रधानाचार्य की आज सुबह हत्या की जाने से शिक्षा जगत और पूरे क्षेत्र को डर का माहौल बना हुए है। स्कूल जाते समय हुए स्कूल के ही एक बाबू द्वारा प्रधानाचार्य की चाकुओं से गोदकर हत्या कर दी गयी। सूचना मिलने पर पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर हत्या के कारणों की तलाश शुरू कर दी है। वहीं इस घटना ने विद्यालयों में सुरक्षा व्यवस्था और कर्मचारियों के बीच संभावित विवादों को लेकर भी कई गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं।

जानकारी के अनुसार आज सुबह बागेश्वर जिले में एक दिल दहला देने वाली वारदात ने पूरे शिक्षा जगत को झकझोर कर रख दिया। राजकीय इंटर कॉलेज भटकोला के प्रधानाचार्य दयानंद टम्टा की स्कूल जाते समय धारदार हथियार से हमला कर हत्या कर दी गई। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, वारदात को विद्यालय के ही एक बाबू ने अंजाम दिया, जो पहले से रास्ते में घात लगाकर बैठा था।

जानकारी के अनुसार, सैंज निवासी 55 वर्षीय (कुछ प्रारंभिक सूचनाओं में 56 वर्ष) प्रधानाचार्य दयानंद टम्टा रोजाना की तरह आज सुबह अपने विद्यालय के लिए निकले थे। वह मुख्य सड़क तक अपनी गाड़ी से पहुंचे और वहां से पैदल स्कूल की ओर बढ़ रहे थे। इसी दौरान विद्यालय जाने वाले मार्ग पर पहले से मौजूद आरोपी बाबू ने अचानक उन पर चाकू से ताबड़तोड़ हमला कर दिया। हमला इतना अचानक ▶▶ शेष पृष्ठ 7 पर

दून वैली मेल

संपादकीय

नई ऊर्जा की पटरी पर भारत

भारत में पहली हाइड्रोजन ट्रेन की शुरुआत केवल एक नई रेल सेवा नहीं, बल्कि ऊर्जा, पर्यावरण और तकनीकी आत्मनिर्भरता की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। रेलवे लंबे समय से देश की आर्थिक और सामाजिक जीवनरेखा रही है। ऐसे में जब यह विशाल परिवहन तंत्र स्वच्छ ऊर्जा की ओर कदम बढ़ाता है, तो उसका प्रभाव केवल यात्रियों की सुविधा तक सीमित नहीं रहता, बल्कि पर्यावरण संरक्षण, ऊर्जा सुरक्षा और औद्योगिक विकास तक पहुंचता है। हाइड्रोजन ट्रेन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें पारंपरिक डीजल ईंधन की जगह हाइड्रोजन फ्यूल सेल का उपयोग किया जाता है। इस प्रक्रिया में ऊर्जा उत्पादन के दौरान कार्बन डाइअरक्साइड या अन्य प्रदूषक गैसों का उत्सर्जन नगण्य होता है। परिणामस्वरूप रेल परिवहन अधिक स्वच्छ, पर्यावरण अनुकूल और टिकाऊ बनता है। यह कदम ऐसे समय में आया है जब दुनिया जलवायु परिवर्तन और प्रदूषण की चुनौती से जूझ रही है। भारत ने 2070 तक नेट-जीरो उत्सर्जन का लक्ष्य तय किया है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए ऊर्जा, परिवहन और उद्योग जैसे क्षेत्रों में व्यापक बदलाव आवश्यक हैं। रेलवे, जो देश में बड़ी संख्या में यात्रियों और माल ढुलाई का दायित्व निभाता है, इस परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। हाइड्रोजन ट्रेन इस दिशा में एक सकारात्मक प्रयोग है, जो भविष्य में डीजल आधारित रेल सेवाओं को स्वच्छ विकल्प प्रदान कर सकता है। इस पहल का एक महत्वपूर्ण पक्ष ऊर्जा आत्मनिर्भरता से भी जुड़ा है। भारत अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं का बड़ा हिस्सा आयातित ईंधन से पूरा करता है। यदि हाइड्रोजन का उत्पादन देश में नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों, जैसे सौर और पवन ऊर्जा के माध्यम से किया जाता है, तो इससे आयातित ईंधन पर निर्भरता कम होगी। साथ ही, हरित हाइड्रोजन उत्पादन का एक नया औद्योगिक क्षेत्र विकसित हो सकता है, जिससे रोजगार, निवेश और तकनीकी नवाचार को भी बढ़ावा मिलेगा। हाइड्रोजन ट्रेन को भारतीय रेलवे के आधुनिकीकरण की व्यापक प्रक्रिया से भी जोड़कर देखा जाना चाहिए। रेलवे पहले ही विद्युतिकरण, उच्च गति, बेहतर सुरक्षा और डिजिटल तकनीकों की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति कर चुका है। हाइड्रोजन आधारित रेल सेवा इस प्रगति का अगला चरण है, जो भारत को भविष्य की परिवहन तकनीकों के क्षेत्र में अग्रणी देशों की श्रेणी में ला सकती है। हालांकि, इस उपलब्धि के साथ कुछ चुनौतियां भी जुड़ी हुई हैं। हाइड्रोजन उत्पादन, भंडारण और परिवहन के लिए विशेष अवसंरचना की आवश्यकता होगी। इसके अलावा, फ्यूल सेल तकनीक की लागत को कम करना और इसे बड़े पैमाने पर व्यवहारिक बनाना भी आवश्यक है। सुरक्षा मानकों, तकनीकी दक्षता और रख-रखाव प्रणाली को मजबूत किए बिना इस तकनीक का व्यापक विस्तार संभव नहीं होगा। सरकार और भारतीय रेलवे को इस दिशा में दीर्घकालिक योजना बनानी होगी। केवल एक प्रतीकात्मक परियोजना के रूप में हाइड्रोजन ट्रेन की शुरुआत पर्याप्त नहीं होगी। आवश्यकता इस बात की है कि हरित हाइड्रोजन उत्पादन को प्रोत्साहन मिले, अनुसंधान एवं विकास पर निवेश बढ़े और रेलवे नेटवर्क में चरणबद्ध तरीके से इस तकनीक का विस्तार किया जाए। यह भी ध्यान रखना होगा कि स्वच्छ ऊर्जा की ओर परिवर्तन केवल पर्यावरणीय आवश्यकता नहीं, बल्कि आर्थिक अवसर भी है। यदि भारत हाइड्रोजन तकनीक में मजबूत क्षमता विकसित कर लेता है, तो वह वैश्विक हरित ऊर्जा बाजार में महत्वपूर्ण स्थान हासिल कर सकता है। रेलवे जैसे बड़े सार्वजनिक क्षेत्र में इस तकनीक का उपयोग देश के निजी उद्योगों को भी नई दिशा दे सकता है। देश की पहली हाइड्रोजन ट्रेन इस बात का प्रतीक है कि भारत पारंपरिक ऊर्जा माडल से आगे बढ़कर भविष्य की हरित अर्थव्यवस्था की ओर कदम बढ़ा रहा है। यह पहल न केवल प्रदूषण कम करने में सहायक होगी, बल्कि भारत को ऊर्जा सुरक्षा, तकनीकी नवाचार और सतत विकास की दिशा में भी मजबूत आधार प्रदान करेगी। अब आवश्यकता इस बात की है कि इस शुरुआत को निरंतरता मिले और इसे व्यापक राष्ट्रीय रणनीति का हिस्सा बनाया जाए। यदि ऐसा हुआ, तो आने वाले वर्षों में भारतीय रेलवे केवल दुनिया के सबसे बड़े रेल नेटवर्कों में से एक नहीं रहेगा, बल्कि स्वच्छ और हरित परिवहन व्यवस्था का भी एक महत्वपूर्ण उदाहरण बन सकेगा।

शांति व्यवस्था भंग करने पर दो लोगों पर कार्यवाही

हमारे संवाददाता

हरिद्वार। शांति व्यवस्था भंग करने के आरोप में पुलिस ने दो लोगों के खिलाफ पुलिस एक्ट के तहत कानूनी कार्यवाही की है। जिसमें अग्रिम कार्यवाही जारी हैं।

जानकारी के अनुसार बीती शाम कोतवाली पिरान कलियर पुलिस द्वारा क्षेत्र में गस्त करते हुये दरगाह साबिर के निकट फव्वारा चौक के पास देखा कि दो व्यक्ति आने जाने वाले जायरिनो के साथ अभद्र आचरण व आमदा फसाद हो रहे हैं, इसी को लेकर उत्पन्न आपसी विवाद में शान्ति/कानून व्यवस्था भंग करने पर पुलिस ने उन 2 व्यक्तियों के विरुद्ध धारा-126/135/170 भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता के अन्तर्गत कार्यवाही की गई। जिनके नाम सलमान उर्फ पहाडी पुत्र नसीम निवासी रहमतपुर रोड स्टेट बैंक के सामने थाना कोतवाली पिरान कलियर जिला हरिद्वार व इसरार पुत्र इसराईल निवासी नई बस्ती मजार के पास पिरान कलियर थाना कोतवाली पिरान कलियर बताये जा रहे है।

इधर 'छात्रों की गूंज' उधर 'युवा अग्निवीर संवाद'

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड की राजनीति दो समानांतर राजनीतिक आयोजनों के नाम रहा। एक ओर लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी का छात्रों की गूंजश् कार्यक्रम था, जहां हजारों छात्र-युवाओं की मौजूदगी में पेपर लीक, बेरोजगारी और शिक्षा व्यवस्था पर तीखे सवाल उठाए गए। दूसरी ओर मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी का युवा अग्निवीर संवाद था, जहां सेना में भर्ती की

◆विधानसभा चुनाव से पहले उत्तराखंड में युवाओं को साधने की सियासी जंग तेज
◆राहुल गांधी ने बेरोजगारी, पेपर लीक और शिक्षा व्यवस्था को बनाया चुनावी मुद्दा
◆सीएम धामी ने संवाद के जरिए राष्ट्रसेवा और रोजगार के अवसरों का संदेश दिया

तैयारी कर रहे युवाओं और अग्निवीरों के साथ संवाद कर राष्ट्रसेवा, अनुशासन और भविष्य के अवसरों का संदेश दिया गया। पहली नजर में यह दो अलग-अलग कार्यक्रम दिखाई देते हैं, लेकिन राजनीतिक मायने कहीं अधिक गहरे हैं। दोनों आयोजनों का लक्ष्य एक ही था उत्तराखंड का युवा मतदाता जो 2027 के विधानसभा चुनाव में निर्णायक भूमिका निभा सकता है।

छात्रों की गूंज कार्यक्रम में राहुल गांधी ने बार-बार प्रतियोगी परीक्षाओं, पेपर लीक, भर्ती प्रक्रियाओं में देरी, बेरोजगारी और युवाओं के भविष्य का मुद्दा उठाया। उन्होंने कहा कि वर्षों तक मेहनत करने वाले युवाओं के साथ अन्याय नहीं होना चाहिए और यदि व्यवस्था उनकी मेहनत का सम्मान नहीं कर पाती, तो सरकारों को जवाब देना होगा। राहुल ने अपने संबोधन में कहा कि देश का युवा नौकरी की भीख नहीं मांग रहा, वह अपनी मेहनत का अधिकार मांग रहा है। पेपर लीक केवल एक परीक्षा नहीं बिगाड़ता, बल्कि लाखों परिवारों का भरोसा भी तोड़ देता है। उन्होंने छात्रों से अपील की कि वे अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाएं और लोकतांत्रिक तरीके से सवाल पूछते रहें। कांग्रेस का पूरा प्रयास इस कार्यक्रम के जरिए युवाओं की नाराजगी को राजनीतिक विमर्श के केंद्र में लाने का था।

उधर मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने युवा अग्निवीर संवाद में सेना में जाने की तैयारी कर रहे युवाओं और अग्निवीरों से संवाद किया। उन्होंने कहा कि उत्तराखंड की पहचान वीरभूमि की रही है और यहां का युवा देश की सुरक्षा में हमेशा अग्रणी रहा है। धामी ने अग्निवीर योजना से जुड़े युवाओं का उत्साह बढ़ाते हुए कहा कि राज्य सरकार पूर्व अग्निवीरों को विभिन्न सरकारी

▶▶ शेष पृष्ठ 7 पर

दो मंच, दो विचारधाराएं और लक्ष्य एक

देहरादून में जो दृश्य दिखाई दिया, वह आने वाले चुनाव की दिशा का संकेत भी था। राहुल गांधी ने युवाओं की नाराजगी, असंतोष और जवाबदेही को राजनीतिक मुद्दा बनाया। मुख्यमंत्री धामी ने युवाओं की आकांक्षा, राष्ट्रसेवा और अवसरों को केंद्र में रखा। कांग्रेस ने यह संदेश देने की कोशिश की कि सरकार युवाओं की उम्मीदों पर खरी नहीं उतरी है, जबकि भाजपा ने यह स्थापित करने का प्रयास किया कि सरकार अवसर पैदा कर रही है और युवाओं को नई दिशा दे रही है।

आगामी चुनाव युवाओं के इर्द-गिर्द

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि 2027 का विधानसभा चुनाव जातीय या पारंपरिक समीकरणों के साथ-साथ युवाओं के मुद्दों पर भी लड़ा जाएगा। भाजपा अपने शासन, योजनाओं, निवेश, सैन्य परंपरा और रोजगार सृजन के प्रयासों को चुनावी मुद्दा बनाएगी, जबकि कांग्रेस बेरोजगारी, पेपर लीक, भर्ती परीक्षाओं और शिक्षा व्यवस्था को सरकार की सबसे बड़ी कमजोरी के रूप में पेश करने का प्रयास करेगी। यानी आने वाले महीनों में युवाओं को लेकर दोनों दलों के बीच राजनीतिक मुकाबला और तेज होने की पूरी संभावना है।

'युवा दांव' से मचा 'सियासी शोर'

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड की राजधानी देहरादून केवल एक राजनीतिक कार्यक्रम की गवाह नहीं बनी, बल्कि उस बेचैनी का मंच बन गई जो वर्षों से प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे लाखों युवाओं के भीतर पल रही है। कांग्रेस नेता और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के छात्रों की गूंज कार्यक्रम ने यह संदेश देने की कोशिश की कि 2027 की चुनावी लड़ाई केवल नेताओं के भाषणों से नहीं, बल्कि युवाओं के सवालों से तय होगी। दून में सुबह से ही छात्रों का उत्साह देखने लायक था। उत्तराखंड के अलावा दिल्ली, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, बिहार, मध्य प्रदेश और हिमाचल प्रदेश से पहुंचे छात्र अपने हाथों में तख्तियां लिए दिखाई दिए। किसी के पोस्टर पर पेपर लीक बंद करो लिखा था, तो कोई मेहनत का हक चाहिए की मांग कर रहा था। मंच से पहले मैदान बोल रहा था।

राहुल गांधी ने अपने भाषण में सीधे सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि आज देश का युवा नौकरी नहीं, न्याय मांग रहा है। मेहनत छात्र करता है, लेकिन व्यवस्था उसकी उम्मीदों पर ताला लगा देती है। पेपर लीक केवल एक अपराध नहीं, यह लाखों युवाओं के सपनों की चोरी है। उन्होंने कहा कि जिस देश का युवा निराश होगा, उस देश का भविष्य भी कमजोर होगा। युवाओं की आवाज दबाकर लोकतंत्र मजबूत नहीं हो सकता। राहुल ने अपने संबोधन में बार-बार छात्रों को संघर्ष जारी रखने का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि जब युवा सवाल पूछता है तो सत्ता असहज हो जाती है। लेकिन लोकतंत्र में सवाल पूछना अपराध नहीं, अधिकार है।

कार्यक्रम का सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह रहा कि मंच पर भाषण से अधिक चर्चा छात्रों के अनुभवों की हुई। प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे कई युवाओं ने अपनी समस्याएं साझा कीं। किसी ने वर्षों से अटकी भर्ती का दर्द बताया तो

❑देशभर से पहुंचे छात्र, पेपर लीक व बेरोजगारी पर राहुल का सीधा हमला
❑देश के युवाओं का भविष्य छीना गया तो सत्ता से हिसाब भी युवा ही लेंगे

किसी ने परीक्षा प्रक्रिया में पारदर्शिता की मांग उठाई। माहौल कई बार राजनीतिक सभा से अधिक छात्र संवाद जैसा दिखाई दिया।

राहुल गांधी के कार्यक्रम के समानांतर भाजपा ने भी राजनीतिक मोर्चा संभाला। कांग्रेस का आरोप है कि राहुल के कार्यक्रम की धार कम करने के लिए समानांतर गतिविधियों और विरोध प्रदर्शनों पर जोर दिया गया। भाजपा इन आरोपों को खारिज करते हुए कहती है कि उसने केवल राहुल गांधी के बयानों का लोकतांत्रिक विरोध किया और राज्य सरकार भर्ती घोटालों पर सख्त कार्रवाई कर चुकी है। लेकिन राजनीतिक गलियारों में चर्चा इस बात की रही कि राहुल गांधी जिस मुद्दे को लेकर आए थे पेपर लीक, बेरोजगारी और युवाओं का भविष्य। वही कार्यक्रम के बाद सबसे ज्यादा चर्चा में रहा। कांग्रेस इसे अपनी रणनीतिक सफलता मान रही है, जबकि भाजपा सरकार की ओर से नकल विरोधी कानून, दोषियों पर कार्रवाई और भर्ती सुधारों को अपनी उपलब्धि के रूप में सामने रखा जा रहा है।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि उत्तराखंड की राजनीति लंबे समय तक सड़क, धर्म, विकास और क्षेत्रीय अस्मिता के इर्द-गिर्द घूमती रही। लेकिन अब रोजगार और प्रतियोगी परीक्षाओं की विश्वसनीयता भी बड़े चुनावी मुद्दे बनते दिख रहे हैं। राहुल गांधी ने अपने पूरे भाषण में यही संदेश देने की कोशिश की कि यदि युवा नाराज है तो सत्ता की सबसे मजबूत कुर्सी भी डगमगा सकती है। कांग्रेस की रणनीति साफ दिखाई दीकृयुवाओं के आक्रोश को राजनीतिक मुद्दा बनाना। देहरादून का छात्रों की गूंज कार्यक्रम भीड़ जुटाने की कवायद भर नहीं था। यह सत्ता को यह याद दिलाने की कोशिश थी कि प्रतियोगी परीक्षा देने वाला युवा अब केवल अभ्यर्थी नहीं, बल्कि एक जागरूक मतदाता भी है। आने वाले विधानसभा चुनाव में वह रोजगार, भर्ती और शिक्षा जैसे मुद्दों पर जवाब मांग सकता है।

अब नजर भाजपा पर है। क्या वह इस चुनौती का जवाब केवल राजनीतिक पलटवार से देगी या युवाओं के सामने ठोस उपलब्धियों और नई घोषणाओं के साथ उतरेगी? क्योंकि चुनावी मौसम में नारे कुछ दिन चलते हैं, लेकिन युवाओं के सवाल लंबे समय तक पीछा नहीं छोड़ते।

प्रतापनगर में सिंचाई विभाग करेगा सात नहरों की मरम्मत

नई टिहरी(आरएनएस)। प्रतापनगर ब्लॉक में लंबे समय क्षतिग्रस्त सात सिंचाई नहरों की मरम्मत का रास्ता साफ हो गया है। नहरों की मरम्मत के लिए राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) ने करीब 2.5० लाख की धनराशि वित्तीय स्वीकृति प्रदान की है।

सड़क निर्माण और प्राकृतिक आपदा से क्षेत्र के गोदड़ी, तलवाड़ी, चाका, भैंगा, सेरा, मछेड़ी, चामासौड़, सुजड़ आदि गांव की नहरे विगत कई वर्षों से क्षतिग्रस्त होने से काश्तकारों को खेतों की सिंचाई के पर्याप्त मात्रा में पानी नहीं मिल पा रहा है जिससे ग्रामीणों की आजीविका के खेती भी प्रभावित हो रही है।

काश्तकार लंबे समय से सिंचाई नहरों की मरम्मत की लंबे समय मांग करते आ रहे थे। लेकिन सिंचाई विभाग के पास बजट का अभाव होने के कारण मरम्मत का कार्य नहीं हो पा रहा है। स्थानीय काश्तकार जय प्रकाश जोशी ने बताया कि क्षेत्र में कई नहरों का निर्माण वर्षों पहले किया गया था।

प्रत्येक वर्ष आपदाओं के कारण नहरे कई जगहों से क्षतिग्रस्त हो गई। पुरानी होने से नहरों में दरारें पड़ने से पानी का रिसाव भी हो रहा है। ग्रामीण किसी तरह से नहरों पर पानी चलवा रहे हैं। बताया कई ऐसे परिवार है जिनकी आजीविका खेती और पशुपालन पर निर्भर है। क्षेत्र के अधिकांश काश्तकार धान, गेहूं आदि के साथ आलू, प्याज, लहसुन आदि नकदी फसलों का उत्पादन करते हैं जिससे उनके परिवार की आजीविका चलती है।

चंबा पुलिस लाइन में चिकित्सा सेवा केंद्र का उद्घाटन

नई टिहरी(आरएनएस)। पुलिस लाइन चंबा में पुलिस कर्मियों और उनके परिजनों के स्वास्थ्य जांच के लिए चिकित्सा केंद्र शुरू किया गया है जिससे अब मामूली बीमारी की दवा के लिए उन्हें दूर नहीं जाना पड़ेगा। चिकित्सा केंद्र में कार्यरत स्वास्थ्य कर्मियों को पुलिस और उनके परिजनों को बेहतर स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने के निर्देश दिए गए हैं।

वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक श्वेता चौबे ने चंबा पुलिस लाइन में चिकित्सा केंद्र का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि पुलिस कर्मियों और उनके परिजनों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराने की दिशा में यह केंद्र महत्वपूर्ण साबित होगा। उन्होंने कहा कि पुलिस कर्मियों का स्वास्थ्य विभाग की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में शामिल है। पुलिसकर्मी दिन-रात जनता की सुरक्षा और सेवा में समर्पित रहते हैं। इसलिए उनके लिए सुलभ, गुणवत्तापूर्ण और समयबद्ध स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराना विभाग का दायित्व है।

एसएसपी ने कहा कि पुलिस कल्याण केवल सुविधाएं उपलब्ध कराने तक सीमित नहीं है बल्कि पुलिस कर्मियों और उनके परिवारों के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ बनाना भी इसका अभिन्न हिस्सा है। इस मौके पर एएसपी दीपक सिंह, सीओ चंद्रमोहन सिंह, प्रतिसार निरीक्षक अमित सिंह और सीओ प्रशिक्षु आदित्य तिवारी आदि मौजूद थे।

फैकल्टी की नियुक्ति के लिए साक्षात्कार के परिणाम का इंतजार

श्रीनगर गढ़वाल(आरएनएस)। मेडिकल कॉलेज के मेडिसिन विभाग में रिक्त फैकल्टी के पदों पर नियुक्ति के लिए मेडिकल कॉलेज प्रशासन को साक्षात्कार के परिणाम का इंतजार है।

विभाग में लंबे समय से प्रोफेसर, एसोसिएट प्रोफेसर और असिस्टेंट प्रोफेसर के पद रिक्त चल रहे हैं। विभाग में कुल 18 पदों में से एक मात्र एसोसिएट प्रोफेसर की तैनाती है। इस कारण विभाग के संचालन का दारोमदार एक एसोसिएट प्रोफेसर के साथ ही चार सीनियर रेजिडेंट व करीब 1० जूनियर रेजिडेंट डॉक्टरों पर है। मेडिसिन विभाग में फैकल्टी की कमी होने से एमबीबीएस छात्रों की पढ़ाई पर भी असर पड़ रहा है। साथ ही मेडिसिन विभाग में उपचार के लिए आने वाले मरीजों को भी विशेषज्ञ व अनुभवी डॉक्टरों की सेवाओं का लाभ नहीं मिल पा रहा है।

मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डा. आशुतोष सयाना का कहना है कि पिछले दो माह में दो बार चिकित्सकों की नियुक्ति के लिए साक्षात्कार हो चुके हैं। अब पिछले माह हुए साक्षात्कार के परिणाम का इंतजार किया जा रहा है। उम्मीद है जल्द विभाग में फैकल्टी की तैनाती हो जाएगी।

वैधानिक सूचना

सुविज्ञ पाठकों से आग्रह है कि इस समाचार पत्र में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन में दिए गए तथ्यों, शर्तों और दावों के प्रति वह खुद भी आश्वस्त हो लें। पाठकों से आग्रह है कि वह प्रकाशित विज्ञापन से प्रभावित होकर कोई कदम उठाने से पहले अपने स्तर पर भी स्वयं के संतुष्ट होने तक संपूर्ण व्यावहारिक जानकारी कर लें। भविष्य में किसी भी प्रकाशित विज्ञापन व लेख में निहित दावों या शर्तों को लेकर पाठकगण को कोई असुविधा या परेशानी होती है तो *सांध्य दैनिक दून वैली मेल* के मुद्रक, प्रकाशक या सम्पादक की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

–प्रबंधक विज्ञापन

‘पंदेरा’ था पहाड़ का ‘सोशल नेटवर्क’

कार्यालय संवाददता

देहरादून। पहाड़ में अगर किसी बुजुर्ग से पूछिए कि गांव की सबसे जीवंत जगह कौन-सी थी, तो शायद वह मंदिर, चौपाल या बाजार का नाम न ले। वह मुस्कुराते हुए कहेगाकृपंदेरा। पंदेरा... यानी वह पत्थरों से बना प्राकृतिक जलस्रोत, जहां पहाड़ की छाती से रिसता हुआ मीठा पानी पूरे गांव की प्यास बुझाता था। लेकिन पंदेरा केवल पानी भरने की जगह नहीं था। वह गांव का सामाजिक विश्वविद्यालय था, जहां जीवन बहता था, रिश्ते बनते थे, गीत गूंजते थे और पूरे गांव की धड़कन सुनाई देती थी।

सुबह की पहली किरण के साथ सिर पर गागर और कमर पर डलिया लिए महिलाएं पंदेरे की ओर निकल पड़ती थीं। रास्ते भर हंसी-मजाक, लोकगीत और पहाड़ी बोली की मिठास बिखरी रहती थी। कोई अपनी बहू की तारीफ कर रही होती, कोई बेटी की शादी की चिंता साझा करती, तो कोई खेतों की फसल का हाल सुनाती। गांव की आधी खबरें अखबार से पहले पंदेरे पर पहुंच जाती थीं। पंदेरा केवल जलस्रोत नहीं था, बल्कि समाज को जोड़ने वाली अदृश्य डोर था। यहां कोई बड़ा-छोटा नहीं होता था। अमीर-गरीब का भेद मिट जाता था। सबकी गागर एक ही धार से भरती थी।

नई-नवेली बहुओं के लिए पंदेरा गांव को समझने की पहली पाठशाला था। यहीं उन्हें रिश्तों की पहचान मिलती, रीति-रिवाजों की सीख मिलती और गांव की संस्कृति से परिचय होता। बुजुर्ग महिलाओं का अनुभव और युवतियों का उत्साह मिलकर एक ऐसा संसार रचते थे, जिसे किसी किताब में नहीं पढ़ाया जा सकता। पहाड़ के अनेक लोकगीतों में पंदेरा बार-बार आता है। पानी भरती महिलाओं की सामूहिक आवाजें घाटियों में गूंजती थीं। वे

◆यहां रिश्तों की मिठास व लोकगीतों की गूंज से बुझती थी प्यास
◆पहाड़ के उसकी कहानी जो कभी था सामाजिक विश्वविद्यालय
◆यहां पहाड़ का मीठा पानी और यहां सजती थी रिश्तों की चौपाल
◆आज नल बुझा रहे हैं प्यास, लेकिन सूख गए रिश्तों के वह झरने

गीत केवल मनोरंजन नहीं थे, बल्कि दुख-सुख बांटने का माध्यम भी थे। कई प्रेम कहानियों की शुरुआत भी पंदेरे की पगडंडियों से हुई और कई सामाजिक रिश्तों की नींव भी यहीं पड़ी।

समय बदला। जल जीवन मिशन और पाइपलाइन गांव-गांव पहुंची। यह विकास की बड़ी उपलब्धि थी। महिलाओं का श्रम कम हुआ, पानी घर तक पहुंचा और जीवन आसान हुआ। लेकिन इस सुविधा के साथ अनजाने में एक सामाजिक विरासत भी पीछे छूट गई। अब गागर की जगह प्लास्टिक की टंकी है। पंदेरे की जगह रसोई का नल है। लोकगीतों की जगह मोबाइल की रिंगटोन है। गांव की खबरें अब सोशल मीडिया से मिलती हैं, लेकिन उनमें वह अपनापन नहीं है जो पंदेरे की बैठकों में होता था।

आज उत्तराखंड के हजारों पारंपरिक नौले, धारे और पंदेरे उपेक्षा का शिकार हैं। कहीं झाड़ियां उग आई हैं, कहीं पानी का स्रोत ही सूख गया है। कुछ जगहों पर सीमेंट और निर्माण ने प्राकृतिक जलधाराओं का रास्ता रोक दिया है। विशेषज्ञ कहते हैं कि यदि इन पारंपरिक जलस्रोतों का संरक्षण नहीं किया गया तो आने वाली पीढ़ियां केवल किताबों में पढ़ेंगी कि कभी पहाड़ में पंदेरा नाम की भी कोई जगह होती थी। जरूर इसके लिए केवल सरकारी योजनाएं ही नहीं, बल्कि सामुदायिक भागीदारी भी जरूरी है। गांव के लोग यदि अपने पंदेरों की सफाई, संरक्षण और पुनर्जीवन का संकल्प लें, तो ये जलस्रोत फिर से जीवित हो सकते हैं। कई गांवों ने यह कर भी दिखाया है।

इसके साथ ही, पंदेरे को केवल जलस्रोत नहीं, बल्कि सांस्कृतिक धरोहर के रूप में भी देखा जाना चाहिए। स्कूलों के बच्चे वहां जाएं, लोकगीत गाए जाएं, पारंपरिक जल संरक्षण की शिक्षा दी जाए और स्थानीय त्योहारों में इन स्थलों का सम्मान हो। क्योंकि पहाड़ का पंदेरा सिर्फ पत्थरों के बीच बहता पानी नहीं था। वह पहाड़ की सामूहिक स्मृति था। वहां से केवल गागरें नहीं भरती थीं, मन भी भरते थे। वहां केवल पानी नहीं बहता था, बल्कि अपनापन, संवाद और संस्कृति भी बहती थी। आज जब हम आधुनिकता की ओर तेजी से बढ़ रहे हैं, तब यह याद रखना होगा कि विकास का अर्थ केवल नई सुविधाएं नहीं होता। विकास वह भी है, जिसमें हम अपनी जड़ों को बचाकर आगे बढ़ें। क्योंकि जिस दिन पहाड़ का आखिरी पंदेरा सूख जाएगा, उस दिन केवल एक जलस्रोत नहीं, बल्कि पहाड़ की एक पूरी संस्कृति भी इतिहास बन जाएगी।

पौड़ी जिले में बनेंगी 13 नई दुग्ध समितियां

श्रीनगर गढ़वाल(आरएनएस)। आंचल डेयरी परिसर दुग्ध विकास विभाग की समीक्षा बैठक हुई। बैठक में पौड़ी जिले में दुग्ध उत्पादन बढ़ाने और दुग्ध समितियों को मजबूत बनाने के लिए कई अहम निर्णय लिए गए। तय किया गया कि जनपद में 13 नई दुग्ध सहकारी समितियों का गठन किया जाएगा जबकि 1० निष्क्रिय या कमजोर समितियों का पुनर्गठन कर उन्हें सक्रिय बनाया जाएगा। इसके साथ ही जनपद में प्रतिदिन 6 हजार लीटर दूध उपार्जन का लक्ष्य निर्धारित किया गया।

इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए प्रत्येक सुपरवाइजर को अपनी-अपनी समितियों से 5००-5०० लीटर अतिरिक्त दूध उपार्जित कराने के निर्देश दिए गए। अधिकारियों ने कहा कि दुग्ध समितियों के साथ नियमित संपर्क बनाए रखते हुए अधिक से अधिक दुग्ध उत्पादकों को जोड़ने पर विशेष जोर दिया जाए। बैठक में आंचल डेयरी के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से लक्ष्य प्राप्ति का आह्वान किया गया। बैठक की अध्यक्षता वरिष्ठ दुग्ध निरीक्षक सुरेंद्र सिंह एवं प्रधान प्रबंधक श्रवण कुमार शर्मा ने की।

शैक्षिक प्रगति ही संस्थान की उन्नति का मूल आधार: कुलपति

हरिद्वार(आरएनएस)। गुरुकुल कांगड़ी समविश्वविद्यालय में नवीन शैक्षणिक सत्र की शुरुआत संकल्प दिवस के साथ हुई। कुलपति प्रो. प्रतिभा मेहता लूथरा ने शिक्षकों और कर्मचारियों से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा व संस्थान के विकास के लिए समर्पित भाव से कार्य करने का आह्वान किया।

गुरुकुल कांगड़ी समविश्वविद्यालय में नवीन सत्रारंभ के अवसर पर आयोजित संकल्प दिवस कार्यक्रम में कुलपति प्रो. प्रतिभा मेहता लूथरा ने शिक्षा की गुणवत्ता और निरंतर प्रयासों को संस्थान की प्रगति का आधार बताया।

उन्होंने कहा कि पुराने अनुभव ही नए उपक्रमों की नींव तैयार करते हैं। कार्य करने वाले व्यक्ति के लिए कल कभी नहीं आता, बल्कि जो आज से शुरुआत करता है, वही सफलता की ओर आगे बढ़ता है। कुलपति ने कहा कि शैक्षिक प्रगति किसी भी विश्वविद्यालय के विकास का मूल कारण होती है। विद्यार्थियों के नव-निर्माण के लिए बेहतर शैक्षिक वातावरण, आधुनिक संसाधन और योग्य शिक्षकों की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय का उद्देश्य केवल डिग्री प्रदान करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों को ज्ञान, संस्कार और कौशल से सशक्त बनाना होना चाहिए।

उन्होंने शिक्षकों और कर्मचारियों से आह्वान किया कि वे अपने दायित्वों का पूरी निष्ठा से निर्वहन करते हुए विश्वविद्यालय को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने में योगदान दें। कुलपति ने कहा कि सामूहिक प्रयासों और सकारात्मक सोच से ही किसी संस्थान की पहचान मजबूत होती है।

संकल्प दिवस के अवसर पर आयोजित यज्ञ में विश्वविद्यालय परिवार ने शैक्षिक उन्नति और बेहतर भविष्य के लिए संकल्प लिया।

कार्यक्रम में कुलसचिव प्रो. सत्यदेव निगमालंकार, वित्ताधिकारी प्रो. वीके सिंह, मुख्य परीक्षा नियंत्रक प्रो. एलपी पुरोहित, आईक्यूएसी निदेशक प्रो. पंकज मदान सहित बड़ी संख्या में शिक्षक और अधिकारी मौजूद रहे।

क्या कम हो रही है आपकी सुनने की क्षमता? शरीर पहले ही देने लगता है ये संकेत

सुनने की क्षमता कम होना केवल बढ़ती उम्र की समस्या नहीं है। आज के समय में तेज शोर, लंबे समय तक ईयरफोन का इस्तेमाल, कुछ बीमारियां और जीवनशैली से जुड़ी कई चीजें लोगों की सुनने की क्षमता पर असर डाल रही हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि सुनने की समस्या अक्सर धीरे-धीरे शुरू होती है। शुरुआत में व्यक्ति को लगता है कि आसपास बहुत शोर है या सामने वाला साफ नहीं बोल रहा, लेकिन असल में यह सुनने की क्षमता में आ रही कमी का संकेत हो सकता है। यही कारण है कि बड़ी संख्या में लोग सालों तक इस समस्या को पहचान नहीं पाते और जब तक इलाज के बारे में सोचते हैं, तब तक परेशानी काफी बढ़ चुकी होती है। वैज्ञानिक रिसर्च के मुताबिक, कान आवाज सुनने के साथ-साथ मस्तिष्क तक सही जानकारी पहुंचाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जब सुनने की क्षमता कम होने लगती है तो व्यक्ति बातचीत को समझने और लोगों से जुडने में मुश्किल होती है। लंबे समय तक सुनने की समस्या को नजरअंदाज करने से तनाव, अकेलापन और मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी परेशानियों का खतरा बढ़ता है।

विशेषज्ञों के अनुसार, सुनने की क्षमता कम होने का पहला संकेत होता है कि कई बार लोग आवाज तो सुन लेते हैं, लेकिन शब्दों को ठीक तरह से समझ नहीं पाते। खासकर ऐसी जगहों पर जहां बहुत सारे लोग एक साथ बात कर रहे हों या आसपास शोर हो, वहां बातचीत समझना मुश्किल लगने लगता है। वैज्ञानिकों का कहना है कि सुनने की क्षमता में शुरुआती कमी अक्सर ऊंची आवृत्ति वाली आवाजों को प्रभावित करती है। ऐसे में कुछ शब्द या अक्षर साफ सुनाई नहीं देते, जिससे बातचीत अधूरी लगती है।

एक और सामान्य संकेत बार-बार लोगों से बात दोहराने के लिए कहना है। जब यह स्थिति ज्यादा बार होने लगे, तब इसे गंभीरता से लेना चाहिए। कई मामलों में परिवार के सदस्य या करीबी लोग सबसे पहले इस बदलाव को महसूस करते हैं। सुनने की क्षमता में कमी का एक और संकेत इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की आवाज बढ़ाना भी माना जाता है। अगर किसी व्यक्ति को टीवी, मोबाइल या रेडियो की आवाज पहले की तुलना में ज्यादा तेज रखनी पड़ रही है, तो यह कानों की बदलती क्षमता का संकेत हो सकता है। चूंकि यह बदलाव धीरे-धीरे होता है, इसलिए कई लोगों को इसका एहसास नहीं होता। फोन पर बातचीत के दौरान होने वाली परेशानी को हल्के में नहीं लेना चाहिए। आमने-सामने बात करते समय हम सामने वाले के चेहरे के भाव, होंठों की गतिविधि और शारीरिक भाषा से भी अर्थ समझ लेते हैं। लेकिन फोन पर केवल आवाज ही सहारा होती है। इसलिए सुनने की क्षमता में थोड़ी सी कमी भी फोन पर बातचीत के दौरान आसानी से महसूस हो सकती है। अगर फोन पर बातें समझने में लगातार मुश्किल हो रही है, तो यह जांच कराने का संकेत हो सकता है। इसके अलावा कानों में लगातार घंटी, सीटी या भनभनाहट जैसी आवाज सुनाई देना भी एक महत्वपूर्ण संकेत माना जाता है। मेडिकल साइंस में इस स्थिति को टिनिटस कहा जाता है। यह कई बार कानों या सुनने की प्रणाली में हो रहे बदलाव का संकेत होता है। यदि ऐसी आवाजें लंबे समय तक बनी रहें, तो विशेषज्ञ से सलाह लेना जरूरी हो जाता है।

च्यूइंग गम को लेकर लोगों को हैं ये भ्रम, इनकी सच्चाई जानना है अहम

च्यूइंग गम का सेवन करते समय कई लोग इससे जुड़े भ्रमों पर विश्वास कर लेते हैं। इनकी सच्चाई जानने के लिए कई शोध भी हुए हैं, जिनके मुताबिक च्यूइंग गम का सेवन करने से कई स्वास्थ्य लाभ मिल सकते हैं। हालांकि, इसके अधिक सेवन से कुछ नुकसान भी हो सकते हैं। आइए आज हम आपको च्यूइंग गम से जुड़े कुछ भ्रम और उनकी सच्चाई बताते हैं, ताकि आप इसके सेवन से होने वाले फायदे और नुकसान को समझ सकें। यह सबसे आम भ्रम है कि च्यूइंग गम चबाने से पाचन रस निकलता है, जो कि गलत है। शोधों से पता चला है कि च्यूइंग गम चबाने से पाचन रस नहीं निकलता है। हालांकि, च्यूइंग गम चबाने से मुंह में लार बनती है, जो पाचन में मदद करती है। लार में पाचन के लिए कुछ तत्व होते हैं, जो खाने को पचाने में मदद करते हैं। हालांकि, यह पाचन के लिए पर्याप्त नहीं है।

यह एक और सामान्य भ्रम है कि च्यूइंग गम चबाने से पेट फूलता है। हालांकि, वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो ऐसा कुछ नहीं होता है। अगर आप च्यूइंग गम चबाते हैं तो आपके मुंह में अधिक हवा जा सकती है, जिससे गैस बनती है और पेट फूलता हुआ लग सकता है। हालांकि, यह महज एक अनुमान है। अगर आप अधिक मात्रा में च्यूइंग गम खाते हैं तो इससे आपका पेट नहीं फूलेगा।

कई लोग मानते हैं कि च्यूइंग गम खाने से पाचन तंत्र खराब होता है, लेकिन यह पूरी तरह से गलत है। शोध बताते हैं कि च्यूइंग गम चबाने से पाचन तंत्र पर कोई बुरा असर नहीं पड़ता। इसके विपरीत, यह मुंह की सफाई में मदद करता है और लार उत्पादन बढ़ाता है, जो पाचन में सहायक होता है। हालांकि, ध्यान रखें कि अधिक मात्रा में च्यूइंग गम खाने से कुछ नुकसान हो सकते हैं। यह भी एक सामान्य भ्रम है कि च्यूइंग गम खाने से दांत खराब हो जाते हैं। यह सच है कि अगर आप शक्कर युक्त च्यूइंग गम खाते हैं तो इससे दांतों पर प्लाक जमा हो सकता है, जो कैविटी का कारण बन सकता है। इसलिए, शक्कर रहित विकल्प चुनें या कम मात्रा में शक्कर वाले च्यूइंग गम खाएं। इसके अलावा नियमित ब्रशिंग और फ्लॉसिंग से भी दांतों की सफाई बनी रहती है। कुछ लोग मानते हैं कि च्यूइंग गम चबाने से किडनी पर बुरा असर पड़ता है, लेकिन यह पूरी तरह गलत है। वैज्ञानिक शोधों से पता चला है कि सामान्य मात्रा में च्यूइंग गम खाने से किडनी पर कोई बुरा असर नहीं पड़ता। हालांकि, अगर आप अधिक मात्रा में च्यूइंग गम खाते हैं तो इससे नकारात्मक प्रभाव नजर आ सकते हैं। इन भ्रमों की सच्चाई जानने के बाद आप अपनी सेहत का बेहतर ख्याल रख सकेंगे।

सेहत ही नहीं खूबसूरती का भी खज़ाना है पालक

पालक सेहत का खजाना माना जाता है। इसमें कई तरह के पोषक तत्व भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं। इसे खाने से अनगिनत फायदे होते हैं। पालक शरीर को पोषण तो देती ही है त्वचा और बालों के लिए भी जबरदस्त फायदेमंद होती है। फाइबर, प्रोटीन, विटामिन ए, विटामिन सी और विटामिन-के से भरपूर इस सब्जी में आयरन, फोलेट और पोटेशियम अच्छी-खासी मात्रा में पाया जाता है। चेहरे पर निखार लाने और खूबसूरती में चार चांद लगाने में पालक के फेस मास्क बेहद ही कारगर होते हैं। जानिए फेस मास्क बनाने का तरीका।

दही-पालक फेस मास्क

1. पालक के पांच पत्ते के हिसाब से तीन चम्मच दही लें

2. दोनों चीजों ग्राइंड कर पेस्ट बनाएं।

3. कम से कम 5 मिनट तक पेस्ट को चेहरे पर लगाएं।

4. इसके बाद गुनगुने पानी से चेहरे को धोएं।

5, इस पेस्ट से चेहरे का पिग्मेंटेशन कम होगा और खूबसूरती बढ़ सकती है।

शहद-पालक मास्क

1. पालक के चार पत्ते लेकर उसका पेस्ट बनाएं।

2. इस पेस्ट में एक चम्मच शहद, नारियल तेल और ऑलिव ऑयल के साथ नींबू का रस मिलाएं।

3. इस पेस्ट को करीब 15 मिनट के लिए फेस पर लगाएं।

4. इसके बाद गुनगुने पानी से चेहरे सो धो लें।

5. चेहरा धोने से पहले गुनगुने पानी में भिगी टॉवल से भाप लें।

6. एक्ने को कम करने में यह पेस्ट कारगर है।

बेसन-पालक मास्क

1. पालक का थोड़ा पतला पेस्ट बनाकर उसमें बेसन और दही मिलाएं।

2. इस पेस्ट को चेहरे और गले पर अच्छी तरह लगाएं।

3. बेसन जब सूख जाए तब चेहरे को गुनगुने पानी से धो लें।

4. ये फेस मास्क डेड स्किन और फ्री रेडिकल्स से छुटकारा दिला सकता है।

बालों को खूबसूरत बनाएं पालक

1. पालक के डंठल सहित लेकर पेस्ट बनाएं।

2. इस पेस्ट में एक-एक चम्मच कैस्टर ऑयल, शहद और नींबू मिलाएं।

3. अब इस पेस्ट से बालों की जड़ों में अच्छी तरह मसाज करें। करीब ३० मिनट बाद हर्बल शैंपू से सिर को अच्छी तरह धो लें। इस पेस्ट से बालों की शाइनिंग बढ़ेगी और मजबूती आएगी।

स्वस्थ रहने के लिए सिर्फ उतना ही खाओ, जितना हजम हो सके!

राजा चंद्रगुप्त मौर्य तीर्थ करने के लिए काशी जा रहे थे। उनके साथ सेनापति, मंत्री और राज-दरबार के दूसरे लोग भी थे। रात होने पर उन्होंने एक जगह पड़ाव डाला। लेकिन चंद्रगुप्त ने नगर के भव्य भवन में ठहरने की अपेक्षा वन में ठहरना उचित समझा। इसलिए वे सभी आम के पेड़ों से भरे एक जंगल में ठहरे।

भोजन तथा विश्राम की व्यवस्था की गई थी, बीच में कुछ नृत्य के कार्यम भी हुए। लेकिन संयोगवश उसी रात चंद्रगुप्त अचानक बीमार हो गए। कुशल वैद्यों के उपचार ने उन्हें स्वस्थ्य तो कर दिया, पर चंद्रगुप्त चिंता में डूब गए और विचार करने लगे कि वन के आस-पास के गांव के लोग किस तरह रहते होंगे?

फिर उन्होंने उनके उपचार के लिए एक वैद्य को नियुक्त कर दिया। लेकिन कोई भी ग्रामवासी अपनी चिकित्सा के लिए नहीं आया, तब वैद्य ने राजा चंद्रगुप्त से कहा, लगता है मैं यहां व्यर्थ ही रह रहा हूं। यहां के लोग बीमार नहीं होते, इसलिए वे मेरे पास उपचार के लिए नहीं आते हैं।

राजा ने वैद्य की शंका का निवारण करते हुए कहा, यहां का हर निवासी श्रम करता है। फिर उसे जब तक भूख परेशान नहीं करती, तब तक वह भोजन नहीं करता। मैंने सुना है कि यहां के लोग कम खाते हैं। यही इनके स्वस्थ रहने का कारण है। स्वस्थ रहने के लिए सिर्फ उतना ही खाओ, जितना हजम हो सके, क्योंकि अधिक खाने वाले लोग जल्दी अल्लाह को प्यारे हो जाते हैं। सुखी रहने के लिए यह जरूरी है कि आपके पास इतनी फुर्सत न हो कि आप सोच सके कि मैं सुखी व्यक्ति हूं या दुखी हूं? यदि आप दूसरों को स्वस्थ देखना चाहते हैं, तब आपको खुद को स्वस्थ रखने का फार्मूला खोजना होगा।

शब्द सामर्थ्य -092

(भागवत साहू)

बाएं से दाएं

1. संबंध, लगाव, नाता, काम 2. सिसकने की आवाज, सीत्कार 4. आग की ज्वाला, दहक 5. दियासलाई 7. प्रतिकार, प्रतिशोध 8. बाबुल की दुआएं लेती जा... गीतवाली बलराज साहनी, मनोजकुमार, राजकुमार, वहीदा की फिल्म 11. करतल ध्वनि 13. आपसी व्यवहार का संबंध, वास्ता 15. वचन, जीभ 16. रोगियों को स्वस्थ और मृतकों को जीवित कर देने वाला 17. एक सुंदर फूलदार वृक्ष 19. पत्नी, बीवी 20. मसालेदार सुगंधित सुरती।

ऊपर से नीचे

1. उचित, उपयुक्त, जायज 2. किवाड़ को अंदर से बंद करने लगा छड़, चटखनी 3. मांस के अत्यंत छोटे टुकड़े 4. माथा, मस्तक 6. कटोरी के आकार का नलीदार पात्र जिसमें तंबाकू रखकर पीते हैं 9. रेखा 10. खून से लथपथ 11. छिपकर बुरी नजर से ताकने की क्रिया, रह रहकर ताकने की क्रिया 12. व्यापार, धंधा 13. शृंगार करना, साजन 14. श्रवणइंद्रीय 16. सीमा, हद 18. चमड़ा, चाम 19. बोझ, दबाव।

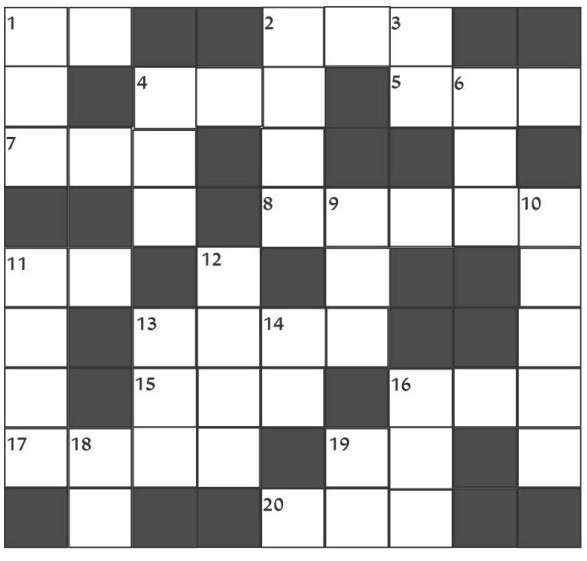

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 91 का हल

मै	दा	न	■	स	र	ग	म	■
त्री	■	सी	■	■	क्षा	■	धु	र्रा
■	सा	ह	स	■	■	■	र	■
स्वा	ग	त	■	स	म	झौ	ता	■
व	र	■	■	र	■	■	■	म
लं	■	वि	ला	स	■	■	दा	म
बी	न	■	ज	■	सा	मा	न	ता
■	ज	■	वा	हि	या	त	■	■
त	र	की	ब	■	ना	■	खा	ली

द इंडिया स्टोरी फिल्म- खाने में छिपे रसायनों के खेल को बेनकाब करेगी

काजल अग्रवाल और श्रेयस तलपड़े की चर्चित फिल्म द इंडिया स्टोरी का टीजर आ गया है। यह भारत देश में रहने वाले हर परिवार के खाने का कड़वा सच बयां करता है, जिसके बारे में लोग कम जानते हैं। इसका निर्देशन चेट्टन डीके ने किया है, जबकि निर्माता व लेखक सागर बी शिंदे हैं। काजल और श्रेयस की यह फिल्म देश में बढ़ती कीटनाशक खेती और उसके समाज पर पड़ रहे गंभीर प्रभावों को उजागर करने का वादा करती है। टीजर की शुरुआत काजल से होती है, जो एक वकील के किरदार में हैं। वह कोर्ट को बताती हैं कि कैसे ज्यादा मुनाफे के चक्कर में सब्जियों, फलों और दूध जैसी रोजमर्रा की चीजों में हानिकारक रसायनों का इस्तेमाल हो रहा है। इसके कारण रोजाना खाया जाने वाला खाना ही धीमे जहर की तरह काम कर रहा है। फिल्म में मनीष वाधवा और मुरली शर्मा भी शामिल हैं। टीजर में यह भी दिखाया गया है कि मिलावटी और जहरीला खाना खाने से लोग बीमार पड़ रहे हैं और अस्पताल के चक्कर काट रहे हैं। द इंडिया स्टोरी' का टीजर एक ऐसी कहानी की झलक देता है, जिसमें आज के मुद्दे होंगे। इसमें दिखाया जाएगा कि खाने-पीने की चीजों में कैसे मिलावट की जाती और यह हमें कैसे बीमार कर रहा है। यह फिल्म लोगों को सोचने पर मजबूर करेगी और जागरूक करेगी। टीजर में किसी भी मुख्य कलाकार को नहीं दिखाया गया है। इसमें खाने-पीने में मिलावट की तस्वीरें और वीडियो दिखाई गई हैं। टीजर के आखिर में बताया गया है कि यह फिल्म 24 जुलाई को रिलीज होगी। इसके निर्देशक चेतन डीके हैं। इस फिल्म के अलावा श्रेयस जल्द ही गोलमाल 5' में भी दिखाई देंगे। इसमें अजय देवगन भी हैं। यह 24 जुलाई को हिंदी, तमिल और तेलुगु भाषाओं में रिलीज होगी।

14 अगस्त, 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी आवारापन 2

इमरान हाशमी और दिशा पाटनी की फिल्म आवारापन 2 का ऐलान पिछले साल हुआ था। 2007 में आई आवारापन की सफलता के बाद निर्माताओं ने इसका सीक्वल बनाने का फैसला लिया था। फिल्म का निर्देशन नितिन कक्कड़ ने किया है, जिन्हें नोटबुक और जवानी जानेमन के लिए जाना जाता है। इसे पहले अप्रैल, 2026 में रिलीज किया जाना था, लेकिन फिर रिलीज तारीख को आगे खिसका दिया गया। अब विशेष फिल्म्स ने इसकी रिलीज तारीख का ऐलान किया है। विशेष फिल्म्स ने सोशल मीडिया पर घोषणा करते हुए बताया है कि आवारापन 2 14 अगस्त, 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। पोस्ट के साथ कैप्शन दिया गया, इस स्वतंत्रता दिवस सप्ताहांत पर खुद को फ्री रखें और 14 अगस्त 2026 को सिनेमाघरों में अवारपन 2 देखने के लिए हमारे साथ जुड़ें। दिलचस्प बात यह है कि फिल्म को बॉक्स ऑफिस पर सनी देओल अभिनीत फिल्म लाहौर 1947 का सामना करना पड़ेगा जो 13 अगस्त को रिलीज हो रही है। आवारापन 2 के जरिए इमरान को शिवम पंडित की भूमिका को दोहराते हुए दिखाया जाएगा। फिल्म पर बात करते हुए अभिनेता ने बताया कि 6 साल से इसकी चर्चा चल रही थी। फिल्म ऐसी जगह पर खत्म हुई थी, जहां शिवम की मौत हो जाती है। उन्होंने आगे बताया कि 2022 में टीम ने मिलकर एक बेहतरीन आइडिया पर काम किया, जब उनके दोस्त बिलाल स्क्रिप्ट लेकर आए। इसके बाद फिल्म पर काम शुरू हुआ था।

बटवारा 1947 टीजर रिलीज, नफरत के दौर में उम्मीद की आवाज बना एक नायक

बंटवारा 1947 इस साल की सबसे बेसब्री से इंतजार की जाने वाली फिल्मों में से एक है. अपने शानदार मोशन पोस्टर और किरदारों के दमदार पोस्टर्स के रिलीज होने के बाद से ही, इस फिल्म ने हर तरफ लोगों का ध्यान खींचा है. यह एक ऐसी कहानी के लिए उत्सुकता बढ़ा रही है जो हिम्मत, बलिदान और कभी न टूटने वाले इंसानी जज्बे से जुड़ी है. अब, इसके दमदार टीज़र के रिलीज होने के साथ ही, फिल्म को लेकर बना हुआ एक्साइटमेंट एक नए मुकाम पर पहुंच गया है.

बंटवारा 1947 का यह दिलचस्प और इंटेंस टीजर दर्शकों को इतिहास के सबसे बड़े मोमेंट्स में से एक में ले जाता है, भारत की आजादी और वो दर्दनाक बंटवारा जिसने एक देश को बांट दिया और हमेशा के लिए करोड़ों जिंदगियों को बदल कर रख दिया. दमदार डायलॉग्स और दिल को छू लेने वाले इमोशनल बैकग्राउंड स्कोर से भरा यह टीज़र इतिहास के सबसे उथल-पुथल भरे चैप्टर के दौरान उम्मीद और लचीलेपन के जज्बे को दिखाता है. हमारी इस कहानी के केंद्र में एक ऐसा हीरो है जो डर और नफरत से ऊपर उठकर असाधारण बहादुरी की मिसाल बनता है. बंटवारा 1947 में शबाना आजमी, सनी देओल, प्रीति जी जिंटा, करण देओल, अली फजल और अभिमन्यु सिंह जैसे शानदार कलाकारों की फौज है. यह फिल्म करीब तीन दशकों के बाद राजकुमार संतोषी और सनी देओल की बहुप्रतीक्षित (मोस्ट-अवेडेट) वापसी को भी दिखाती है. आमिर खान प्रोडक्शंस के बैनर तले बनी बंटवारा 1947 को नेशनल अवार्ड विनर फिल्ममेकर राजकुमार संतोषी ने डायरेक्ट किया है. इसका म्यूजिक ए. आर. रहमान ने तैयार किया है, जबकि गाने जावेद अख्तर ने लिखे हैं. आमिर खान और अपर्णा पुरोहित द्वारा प्रोड्यूस की गई यह फिल्म पार्टीशन डे के मौके पर 14 अगस्त 2026 को दुनिया भर के सिनेमाघरों में रिलीज होने के लिए पूरी तरह तैयार है.

तमन्ना भाटिया सिनेमा में महिलाओं की स्थिति पर बोलीं- बॉलीवुड में आजादी और साउथ में पितृसत्ता

मशहूर अभिनेत्री तमन्ना भाटिया ने बॉलीवुड और साउथ फिल्म इंडस्ट्री के बीच के बड़े अंतर को लेकर खुलकर बात की है। उन्होंने साउथ सिनेमा में महिलाओं की स्थिति और वहां हावी पितृसत्तात्मक सोच पर सवाल उठाते हुए कहा कि हिंदी सिनेमा अभिनेत्रियों को किरदारों के चुनाव में कहीं ज्यादा आजादी और विविधता देता है। तमन्ना का मानना है कि कमर्शियल स्तर पर साउथ सिनेमा महिलाओं के लिए ज्यादा सीमित है।

तमन्ना ने हिंदी फिल्म इंडस्ट्री और दक्षिण भारतीय सिनेमा के बीच के अंतरों पर बेहद बेबाक तरीके से बात की। तमन्ना ने इस बात पर जोर दिया कि हिंदी फिल्म इंडस्ट्री कलाकारों को अपने किरदारों के चयन में अधिक लचीलापन और स्वतंत्रता देती है। उनके मुताबिक, बॉलीवुड में कलाकारों के सामने ये सख्त शर्त नहीं होती कि उन्हें हर व्यावसायिक मापदंड पर खरा उतरना ही है।

तमन्ना के अनुसार, बॉलीवुड में 2 तरह के कलाकार होते हैं। कलात्मक नजरिए वाले अभिनेता कुछ खास किरदारों तक सीमित रहते हैं और उनके लिए ग्लैमरस डांस जरूरी नहीं होता। बॉलीवुड कलाकारों को कलात्मक या व्यावसायिक में से कोई एक रास्ता चुनने का विकल्प देता है, वहीं, साउथ सिनेमा पर उन्होंने कहा कि वहां व्यावसायिक फिल्मों में महिलाओं को अक्सर एक खास नजरिए से दिखाया जाता है, जो कभी-कभार पितृसत्तात्मक लग सकता है।

तमन्ना के मुताबिक, बॉलीवुड के उलट साउथ में अभिनेत्रियों से ये उम्मीद की जाती है कि वे अभिनय और व्यावसायिकता दोनों में एक साथ महारत हासिल करें। अगर किसी अभिनेत्री को वहां लंबे समय तक टिके रहना है तो वो केवल किसी एक रास्ते को नहीं चुन सकती। उसे गंभीर अभिनय के साथ-साथ फिल्मों के कमर्शियल पहलुओं जैसे ग्लैमर और डांस को भी बखूबी संभालना होता है। इस वजह से ये इंडस्ट्री कुछ मायनों में अधिक प्रतिबंधात्मक हो जाती है।

तमन्ना ने डांस नंबर्स पर भी बात की और आइटम सॉन्ग्स के साथ अक्सर जुड़े रहने वाले कलंक का बचाव किया। वो उनके मनोरंजन मूल्य को रेखांकित करते हुए उन्हें पार्टी गाने कहना पसंद करती हैं। करीना कपूर और कैटरीना कैफ जैसी अभिनेत्रियों का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि ऐसे गाने अक्सर फिल्मों से भी ज्यादा लंबे समय तक टिके रहते हैं और अपने आप में सांस्कृतिक पल बन जाते हैं।

राजकुमार राव की फिल्म प्रहार-द उज्ज्वल निकम स्टोरी की रिलीज तारीख का ऐलान

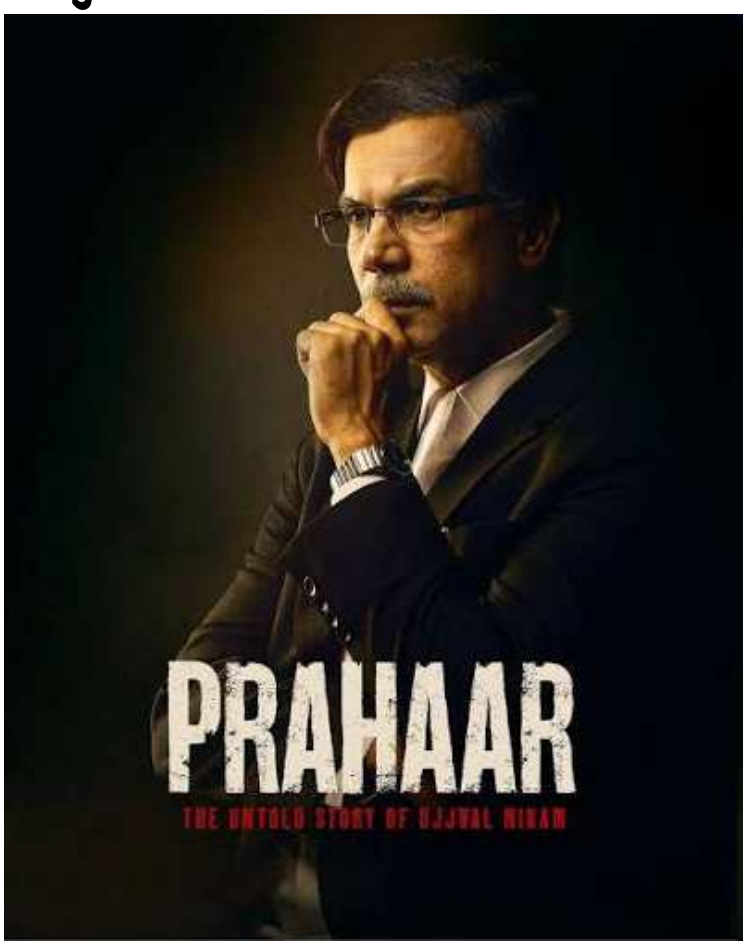

मैडॉक फिल्म्स ने अपनी अगली फिल्म प्रहार- द उज्ज्वल निकम स्टोरी का ऐलान कर दिया है। इसमें राजकुमार राव मुख्य किरदार में नजर आएंगे। उनके साथ लीड रोल में वामिका गब्बी हैं, जो अभिनेता के साथ पहले भूल चूक माफ (2025) में नजर आई थीं। अविनाश अरुण द्वारा निर्देशित यह एक बायोग्राफिकल फिल्म है, जो देश के सबसे प्रसिद्ध वकीलों में से एक उज्ज्वल निकम की जिंदगी से प्रेरित होगी। फिल्म की रिलीज तारीख का ऐलान कर दिया गया है।

ट्रेड विश्लेषक और फिल्म समीक्षक तरण आदर्श ने एक्स पर फिल्म की रिलीज तारीख का ऐलान किया है। उन्होंने लिखा, दिनेश विजान और राजकुमार राव एक बार फिर साथ आ रहे हैं। प्रहार- द उज्ज्वल निकम स्टोरी की रिलीज तारीख का ऐलान हो गया है। यह 7 अगस्त, 2026 को आएगी। दिलचस्प बात यह है कि मैडॉक एक ही महीने में अपनी 2 फिल्में लेकर आ रहा है। दरअसल, श्रद्धा कपूर अभनीत फिल्म ईथा 28 अगस्त को रिलीज होगी।

30 मार्च, 1953 को जलगांव में जन्मे उज्ज्वल निकम भारत के सबसे प्रतिष्ठित लोक अभियोजकों में से एक हैं। उन्हें कई ऐतिहासिक आपराधिक मामलों को संभालने के लिए जाने जाते हैं। खासतौर पर, 26/11 मुंबई आतंकी हमलों के मुकदमे में दोषियों को सजा दिलाने में अहम भूमिका निभाई थी। राजकुमार की फिल्म इस ऐतिहासिक मुकदमे के साथ-साथ अन्य महत्वपूर्ण कानूनी मामलों पर प्रकाश डालेगी। फिल्म में सिकंदर खेर और जयदीप अहलावत भी महत्वपूर्ण भूमिकाओं में शामिल हैं।

क्षतिग्रस्त पुलिया, 100 परिवारों को आनाजाना मुश्किल

कोटद्वार(आरएनएस)। द्वारीखाल ब्लॉक की ग्रामसभा च्वरा और सुराड़ी के पांच गांवों को जोड़ने वाली हिंवल नदी की पुलिया का निर्माण दो वर्ष बाद भी शुरू नहीं हो पाया है। इससे करीब 100 परिवारों और जीआईसी चाक्यूसैंण के छात्र-छात्राओं को रोजाना जान जोखिम में डालकर टूटी पुलिया से आवाजाही करनी पड़ रही है। ग्रामीणों ने निर्माण कार्य शुरू न होने पर आंदोलन की चेतावनी दी है। ग्राम प्रधान च्वरा प्रीति देवी, ग्राम प्रधान सुराड़ी विनीता देवी, क्षेत्र पंचायत सदस्य कादंबरी देवी सहित ग्रामीणों ने बताया कि सौड़, तिग्नया, सुराड़ी, भगोला और सैंणा गांवों को जोड़ने के लिए करीब 20 वर्ष पहले क्षेत्र पंचायत निधि से एक लाख की लागत से हिंवल नदी में पुलिया का निर्माण कराया गया था। वर्ष 2023 में आई बाढ़ में पुलिया का एक पिलर क्षतिग्रस्त हो गया, जिसके बाद से आवागमन जोखिम भरा बना हुआ है।ग्रामीणों के अनुसार नई पुलिया निर्माण के लिए अक्तूबर 2025 में जिला योजना से पांच लाख की धनराशि स्वीकृत हुई थी लेकिन नौ माह बीतने के बावजूद कार्यदायी संस्था लोनिवि दुगड्डा ने निर्माण कार्य शुरू नहीं किया। ग्रामीणों ने बताया कि ब्लॉक प्रमुख बीना राणा ने भी मौके का निरीक्षण कर शीघ्र निर्माण शुरू कराने का आश्वासन दिया था लेकिन अब तक कोई कार्रवाई नहीं हुई। ईई निर्भय सिंह ने बताया कि मामला मेरे संज्ञान में नहीं है। अधीनस्थ अधिकारियों से जानकारी लेकर आवश्यक कार्रवाई की जाएगी।

उप-डाकघर शिफ्ट करने के विरोध में धरना

पौड़ी(आरएनएस)। कीर्तिनगर उप-डाकघर को जन-सुलभ स्थान से जाखणी स्थानांतरित किए जाने का लोगों ने विरोध किया और सांकेतिक धरना दिया। क्षेत्रवासियों ने उपजिलाधिकारी कीर्तिनगर को ज्ञापन सौंपकर डाकघर को पुन: पुराने स्थान पर स्थापित करने की मांग की। उन्होंने चेतावनी दी यदि जल्द सकारात्मक कार्रवाई नहीं हुई तो जन आंदोलन किया जाएगा। कीर्तिनगर पुल के समीप सांकेतिक धरने के बाद एसडीएम मौके पर पहुंचे। इस दौरान स्थानीय लोगों ने कहा कि उप-डाकघर को पुराने स्थान से हटाए जाने के बाद आम लोगों को डाक सेवाओं का लाभ लेने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। पहले उप-डाकघर अधिक सुगम था और आमजन के लिए आसानी से पहुंच योग्य था। उन्होंने यह भी कहा यदि डाकघर को पुराने स्थान पर नहीं लाया जाता है तो नए पुल (राष्ट्रीय राजमार्ग) के समीप संचालित शराब के ठेके को भी वहां से हटाया जाए। कहा गया कि मांगों पर शीघ्र कार्रवाई नहीं होने पर क्षेत्रवासी आंदोलन करेंगे। ज्ञापन देने वालों में सामाजिक कार्यकर्ता अचल नेगी, रघुवीर पंवार, हिम्मत नेगी, सुनील पोखरियाल, राजेंद्र रावत, प्रदीप गोयल, रोशन सेमवाल आदि शामिल थे।

सू- दोकू क्र.092

	7				1		3	
1		9				5		
			3				1	
		5						3
3					2		5	
				3				2
	4						7	
7		8		1		6		
	6		7		9			1

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गो का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक र सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.91 का हल

5	2	4	9	6	7	8	1	3
3	6	7	4	1	8	2	9	5
8	1	9	3	2	5	4	6	7
6	3	5	1	9	4	7	2	8
7	9	8	5	3	2	6	4	1
2	4	1	7	8	6	5	3	9
4	5	3	6	7	9	1	8	2
9	8	6	2	5	1	3	7	4
1	7	2	8	4	3	9	5	6

जीआईसी कोटद्वार का 86 साल पुराना भवन बदहाल

कोटद्वार(आरएनएस)। जीआईसी कोटद्वार का 86 वर्ष पुराना प्रथम ब्लॉक जर्जर हालत में पहुंच गया है। भवन के पांच कमरे निष्प्रयोज्य घोषित किए जा चुके हैं जबकि अन्य कक्ष भी खस्ताहाल है। बरसात के दौरान छत से पानी टपकने के कारण कमरों और बरामदों में जलभराव हो जाता है जिससे पढ़ाई प्रभावित हो रही है। मजबूरी में विद्यालय प्रशासन को कक्षा छह से नौ तक की कक्षाएं दूसरे ब्लॉक के बरामदों और सभागार में संचालित करनी पड़ रही हैं। भवन निर्माण के लिए मंडी समिति की ओर से तैयार की गई डीपीआर पिछले दो साल से शासन में धूल फांक रही है।

वर्ष 1940 में निर्मित इस भवन में पहले केवल जूनियर कक्षाएं संचालित होती थीं। वर्तमान में जूनियर कक्षाओं को थर्ड ब्लॉक में शिफ्ट कर दिया गया है। यहां कक्षा नौ की पढ़ाई के अलावा स्काउट कक्ष, दो स्टाफ रूम, पुस्तकालय और व्यावसायिक शिक्षा प्रयोगशाला भी संचालित होती हैं। भवन की खराब स्थिति के चलते विद्यार्थियों और शिक्षकों को लगातार दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है।

दुगड्डा ब्लॉक का प्रमुख शिक्षण संस्थान होने के कारण जीआईसी कोटद्वार बोर्ड परीक्षाओं, उत्तर पुस्तिका मूल्यांकन, बैक पेपर संकलन और विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं का महत्वपूर्ण केंद्र भी है। उत्तराखंड लोक सेवा आयोग, अधीनस्थ सेवा चयन आयोग समेत विभिन्न विभागों की परीक्षाएं और शिक्षा विभाग की ब्लॉक, जिला एवं राज्य स्तरीय गतिविधियां भी यहीं आयोजित होती हैं।

विद्यालय प्रबंधन ने कई बार उच्चाधिकारियों को भवन की स्थिति से अवगत कराया लेकिन अब तक स्थायी समाधान नहीं हो सका है। दो वर्ष पूर्व कार्यदायी संस्था मंडी समिति ने पांच नए कमरे, पुस्तकालय, गर्ल्स कॉमन रूम, दो प्रयोगशालाएं, छात्र-छात्राओं के लिए शौचालय, सभागार और चारदीवारी के निर्माण के लिए 265.95 लाख रुपये की विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) तैयार कर शासन को भेजी थी लेकिन अभी तक बजट स्वीकृत नहीं हो सका है।

प्रभारी प्रधानाचार्य मुकेश रावत ने बताया कि दो साल पहले पांच कमरे, लाइब्रेरी, गर्ल्स कॉमन रूम व दो प्रयोगशाला के निर्माण के लिए कार्यदायी संस्था मंडी समिति ने इसके लिए डीपीआर तैयार कर शासन को भेज दी थी लेकिन अभी तक कोई कार्रवाई नहीं हुई। उच्चाधिकारियों को लगातार मामले से अवगत कराया जा रहा है।

ग्रामीणों ने की नाला खुलवाए जाने की मांग

रुड़की(आरएनएस)। अकौढा खुर्द गांव के ग्रामीणों ने खेतों के रास्ते में भरे पानी को निकलवाए जाने की मांग करते हुए एसडीएम लक्सर को ज्ञापन दिया है।

एसडीएम ने राजस्व निरीक्षक व एसीओ चकबंदी को मामले की जांच कर कार्रवाई करने के आदेश दिए हैं। अकौढा खुर्द गांव के ग्रामीणों ने एसडीएम अनिल कुमार शुक्ला को पत्र देकर बताया की उनका गांव चकबंदी प्रक्रिया के तहत चल रहा है। लेकिन गांव से पानी निकासी होने वाली पुलिया बंद पड़ी हुई है। जिसकी वजह से पानी ग्रामीणों के खेतों में भर रहा है और उन्हें दिक्कत का सामना करना पड़ रहा है। मामले में तत्काल कार्रवाई किए जाने की मांग की। एसडीएम ने राजस्व निरीक्षक और एसीओ चकबंदी को कार्रवाई का भरोसा दिया है।

शिकायत करने वालों में विनोद कुमार, कुलदीप, सुनील, वासु गुप्ता, बाबूराम, राजवीर, अनुज, अंतरपाल, नितिन, आर्यन, सुखबीर, कुलदीप बाबूराम अंकुर शर्मा और मनोज कुमार आदि शामिल रहे।

लूथापुर-बालागंज संपर्क मार्ग पर हिचकोले खाकर हो रही आवाजाही

कोटद्वार(आरएनएस)। भाबर के वार्ड-33 हल्दूखाता में करीब दो किलोमीटर लंबा लूथापुर-बालागंज संपर्क मार्ग अनदेखी के कारण पगडंडी में तब्दील हो गया है। मार्ग पूरी तरह से बदहाल पड़ा है। इस मार्ग पर पड़े गड्ढों से स्कूली बच्चों, सिडकुल के कर्मचारियों और आमजनता को आवागमन में परेशानी हो रही है। स्थानीय लोग लंबे समय से मार्ग के डामरीकरण की मांग कर रहे हैं।इस संपर्क मार्ग से सिडकुल और जशोधरपुर में कार्यरत सैकड़ों कर्मचारी हर रोज आवाजाही करते हैं। क्षेत्रवासियों की ओर से मुख्यमंत्री पोर्टल पर भी मार्ग की शिकायत दर्ज कराई है। जनप्रतिनिधियों की ओर से सड़क सुदृड़ीकरण का आश्वासन दिया था लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई।क्षेत्रवासी जगदंबा प्रसाद उनियाल, मुकेश कुमार, गौरव कुमार, संदीप कुमार, अनिल कुमार, रोहित सिंह, अजीत कुमार, बॉबी, सुनीता का कहना है कि यह मार्ग पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो चुकी है जिस पर आए दिन दुर्घटनाएं हो रही है।

एकल अभियान अंचल के आचार्या का अभ्यास वर्ग शुरु

चमोली(आरएनएस)। एकल अभियान अंचल गोपेश्वर (पीपलकोटी व मंडल) के आचार्यों का पांच दिवसीय वार्षिक अभ्यास वर्ग बृहस्पतिवार से नगर पालिका सभागार में शुरू हुआ। मुख्य वक्ता उत्तराखंड संभाग सदस्य एवं भाजपा प्रदेश सह-संयोजक (व्यवसाय प्रकोष्ठ) अतुल शाह ने कहा कि एकल अभियान केवल शिक्षा का कार्यक्रम नहीं, बल्कि संस्कारित, आत्मनिर्भर और सशक्त भारत के निर्माण का जनआंदोलन है। उन्होंने कहा कि आचार्य ग्रामीण और जनजातीय क्षेत्रों में शिक्षा के साथ संस्कार, सामाजिक समरसता, स्वावलंबन और राष्ट्रभक्ति का भाव विकसित कर रहे हैं। जिला प्रचारक मिथिलेश ने संगठन की कार्यप्रणाली और उद्देश्यों पर प्रकाश डाला, जबकि सामाजिक कार्यकर्ता अंकित ने एकल विद्यालयों की भूमिका की सराहना की। इस मौके पर हरिप्रसाद ममगाई, रश्मि नेगी आदि मौजूद रहे।

कांवड़ यात्रा से पहले सभी तैयारियां समय पर पूरी हों!

हरिद्वार(आरएनएस)। गढ़वाल कमिश्नर आनंद स्वरूप ने कांवड़ यात्रा की तैयारियों का स्थलीय निरीक्षण करते हुए अधिकारियों को निर्देश दिए कि सभी व्यवस्थाएं समयबद्ध और गुणवत्तापूर्ण ढंग से पूरी की जाएं। ताकि शिवभक्तों को किसी प्रकार की असुविधा न हो।

गढ़वाल कमिश्नर आनंद स्वरूप ने कांवड़ पटरी मार्ग पर चल रहे निर्माण और मरम्मत कार्यों का निरीक्षण किया। उन्होंने मार्ग की साफ-सफाई, प्रकाश व्यवस्था, पेयजल, बैरिकेडिंग, सुरक्षा प्रबंध और शिवभक्तों के लिए की जा रही अन्य सुविधाओं की विस्तार से समीक्षा की। निरीक्षण के दौरान उन्होंने संबंधित विभागों के अधिकारियों को निर्देश दिए कि सभी कार्य तय समयसीमा के भीतर गुणवत्ता के साथ पूरे किए जाएं, जिससे यात्रा के दौरान किसी प्रकार की अव्यवस्था न होने पाए। गढ़वाल कमिश्नर ने कहा कि जिला प्रशासन कांवड़ मेले के सफल, सुरक्षित और व्यवस्थित आयोजन के लिए पूरी तरह तैयार है।

उन्होंने कहा कि इस वर्ष पिछले वर्ष की तुलना में अधिक संख्या में कांवड़ यात्रियों के हरिद्वार पहुंचने की संभावना है। इसे देखते हुए सभी विभाग बेहतर समन्वय के साथ कार्य करें और अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन पूरी गंभीरता से करें। उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि यात्रा मार्ग पर लगातार निगरानी रखी जाए और जहां भी किसी प्रकार की कमी दिखाई दे, उसे तत्काल दूर किया जाए। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी मयूर दीक्षित ने गढ़वाल कमिश्नर को कांवड़ मेले की तैयारियों की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि विभिन्न विभागों की ओर से यात्रा मार्ग पर मूलभूत सुविधाओं को सुदृढ़ करने के साथ सुरक्षा और यातायात व्यवस्था को भी अंतिम रूप दिया जा रहा है। श्रद्धालुओं की सुविधा को ध्यान में रखते हुए सभी आवश्यक इंतजाम समय पर पूरे करने के लिए विभागीय स्तर पर लगातार मॉनिटरिंग की जा रही है। स्थलीय निरीक्षण के दौरान अपर जिलाधिकारी जितेंद्र कुमार, उप जिलाधिकारी योगेश कुमार, तहसीलदार सचिन कुमार सहित संबंधित विभागों के अधिकारी मौजूद रहे। अधिकारियों ने गढ़वाल कमिश्नर को विभिन्न कार्यों की प्रगति से अवगत कराया, जिस पर उन्होंने आवश्यक दिशा-निर्देश भी दिए।

ऋषिकेश फोर/सिक्स लेन पर उत्तराखण्ड सरकार का बड़ा यू-टर्न

विरोध के बीच सीएम धामी ने पेड़ कटान पर लगाई रोक

हमारे संवाददाता

देहरादून। देहरादून-ऋषिकेश फोर/सिक्स लेन परियोजना के लिए प्रस्तावित हजारों पेड़ों की कटाई को लेकर पिछले कई दिनों से जारी विरोध प्रदर्शन, पर्यावरणविदों की आपत्तियों और स्थानीय लोगों के दबाव के बाद मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने बड़ा फैसला लिया है। मुख्यमंत्री ने आज सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर घोषणा करते हुए कहा कि जब तक सभी पक्षों के साथ संतोषजनक सहमति और विश्वास का वातावरण नहीं बन जाता, तब तक परियोजना के तहत पेड़ों का कटान स्थगित रहेगा।

यह फैसला ऐसे समय आया है जब बीती रात कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष एवं लोकसभा

जनभावनाओं से ऊपर नहीं विकासः धामी

में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी भी देहरादून पहुंचे थे। एयरपोर्ट जाते समय उन्होंने प्रदर्शन कर रहे पर्यावरण कार्यकर्ताओं और स्थानीय नागरिकों से मुलाकात की थी तथा संसद में यह मुद्दा उठाने का भरोसा दिया था। इसके बाद आज मुख्यमंत्री धामी के इस फैसले को राजनीतिक और पर्यावरणीय दोनों दृष्टि से अहम माना जा रहा है। मुख्यमंत्री धामी ने अपने बयान में कहा कि देहरादून-ऋषिकेश फोर/सिक्स लेन परियोजना को लेकर नागरिकों, पर्यावरण प्रेमियों और स्थानीय लोगों द्वारा व्यक्त चिंताओं का उन्होंने गंभीरता से संज्ञान लिया है। उन्होंने स्पष्ट किया कि यह परियोजना भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण की महत्वपूर्ण अवसंरचना परियोजना है, जिस पर उत्तराखंड हाईकोर्ट के निर्देशों तथा सभी वैधानिक और पर्यावरणीय स्वीकृतियों का पालन करते हुए कार्यवाही की जा रही थी। मुख्यमंत्री ने बताया कि परियोजना में वन्यजीव संरक्षण के लिए करीब 3.5 किलोमीटर लंबा हाथी अंडरपास तथा छोटे वन्यजीवों के आवागमन के लिए विशेष कल्वर्ट बनाए जाने का भी प्रावधान है, जिससे मानवखवन्यजीव संघर्ष और सड़क हादसों में वन्यजीवों की मौत कम करने का प्रयास किया जाएगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि विकास राज्य के लिए आवश्यक है, लेकिन जनभावनाओं, पर्यावरण और स्थानीय हितों की अनदेखी कर कोई निर्णय नहीं लिया जाएगा।

प्रधानाचार्य की चाकू से गोद कर....

◀◀ पृष्ठ 1 का शेष

और घातक था कि प्रधानाचार्य को संभलने तक का मौका नहीं मिला। शरीर पर कई वार होने से वह गंभीर रूप से घायल होकर सड़क पर ही लहूलुहान होकर गिर पड़े। घटना के बाद क्षेत्र में अफरा-तफरी मच गई। घटना की सूचना मिलते ही परिजन और स्थानीय लोग गंभीर रूप से घायल प्रधानाचार्य को तत्काल जिला अस्पताल लेकर पहुंचे। चिकित्सकों ने स्वास्थ्य परीक्षण के बाद उन्हें मृत घोषित कर दिया। अस्पताल से सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर पंचनामा भरने के बाद पोस्टमार्टम की कार्रवाई शुरू कर दी। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस और प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी मौके पर पहुंचे। घटनास्थल का बारीकी से निरीक्षण कर फॉरेंसिक साक्ष्य जुटाए गए। पुलिस ने पूरे मामले की जांच तेज कर दी है साथ ही आरोपी की गिरफ्तारी के प्रयास शुरू कर दिये।

इधर 'छात्रों की गूंज' उधर 'युवा...

◀◀ पृष्ठ 2 का शेष

सेवाओं और अन्य क्षेत्रों में प्राथमिकता देने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने युवाओं से अनुशासन, कौशल विकास और आत्मनिर्भरता पर जोर देते हुए राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाने का आह्वान किया। भाजपा का संदेश स्पष्ट था कि युवा केवल सरकारी नौकरी का उम्मीदवार नहीं, बल्कि उद्यमिता, कौशल, सेना और नए अवसरों के माध्यम से भी अपना भविष्य बना सकता है।

उत्तराखंड देश के उन राज्यों में है जहां बड़ी संख्या में युवा प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करते हैं। सेना में भर्ती की परंपरा भी यहां बेहद मजबूत रही है। इसके साथ ही पलायन, सीमित औद्योगिक विकास और रोजगार के अवसरों की कमी जैसे मुद्दे लंबे समय से चर्चा में हैं। यही कारण है कि आज राज्य का युवा केवल रोजगार ही नहीं, बल्कि पारदर्शी भर्ती प्रक्रिया, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, कौशल विकास और सम्मानजनक अवसरों की भी अपेक्षा रखता है। भाजपा और कांग्रेस दोनों इस मनोविज्ञान को समझ रही हैं और उसी के अनुरूप अपनी रणनीति तैयार कर रही हैं।

देहरादून में हुए दोनों कार्यक्रमों ने एक बात बिल्कुल स्पष्ट कर दी कि उत्तराखंड की राजनीति का केंद्र अब युवा है। एक मंच से व्यवस्था से सवाल पूछने का संदेश दिया गया, तो दूसरे मंच से राष्ट्र निर्माण और अवसरों का भरोसा जगाने की कोशिश हुई। अब असली परीक्षा राजनीतिक दलों की नहीं, बल्कि उनके वादों की है। क्योंकि आज का युवा केवल भाषण नहीं सुनता, वह परिणाम भी देखता है। चुनावी मंचों पर तालियां बज सकती हैं, लेकिन मतदान केंद्र तक वही मुद्दे पहुंचते हैं जो युवाओं के जीवन को सीधे प्रभावित करते हैं। 2027 की चुनावी बिसात पर भाजपा और कांग्रेस दोनों ने अपनी चाल चल दी है। अब देखना यह है कि उत्तराखंड का युवा किस नैरेटिव पर अधिक भरोसा करता है कि व्यवस्था से जवाब मांगने वाले संदेश पर या अवसर और राष्ट्रनिर्माण के वादे पर।

पेपरलीक बनाम किरदारलीक

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड की राजनीति में राहुल गांधी के पेपरलीक मुद्दे ने एक बार फिर सत्ता और विपक्ष के बीच तीखी जुबानी जंग छेड़ दी है। कांग्रेस का आरोप है कि राहुल गांधी द्वारा युवाओं के रोजगार, भर्ती घोटालों और पेपरलीक जैसे मुद्दों पर सवाल उठाने के बाद भाजपा ने मूल मुद्दों से ध्यान हटाने की कोशिश की। कांग्रेस नेताओं का कहना है कि दून में बड़े आयोजन और सड़कों पर विरोध प्रदर्शन के जरिए युवाओं के सवालों को दबाने का प्रयास किया गया।

कांग्रेस के सोशल मीडिया और पार्टी नेताओं की ओर से यह भी कहा गया कि भारी बारिश के बीच महिला कार्यकर्ताओं को विरोध प्रदर्शन के लिए उतारना भाजपा की राजनीतिक मजबूरी को उजागर करता है। कांग्रेस ने तीखा तंज कसते हुए कहा कि पेपरलीक की क्लास से ध्यान भटकाने की कोशिश में भाजपा का किरदारलीक हो गया। राहुल गांधी ने अपने उत्तराखंड दौरे के दौरान राज्य में भर्ती परीक्षाओं में पेपरलीक, बेरोजगारी और युवाओं के भविष्य को प्रमुख मुद्दा बनाया। उन्होंने आरोप लगाया कि प्रतियोगी परीक्षाओं की पारदर्शिता पर लगातार सवाल उठ रहे हैं

●राहुल के सवालों से ध्यान भटकाने की कोशिश या भाजपा की रणनीतिक चूक
●लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के बयान के बाद सियासी जंग तेज

और युवाओं का विश्वास कमजोर हुआ है। कांग्रेस का दावा है कि इन्हीं सवालों ने भाजपा को असहज कर दिया।

दूसरी ओर भाजपा ने राहुल गांधी के आरोपों को राजनीतिक नौटंकी करार दिया। भाजपा नेताओं का कहना है कि राज्य सरकार ने भर्ती घोटालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की है, दोषियों को जेल भेजा गया है और देश का सबसे कड़ा नकल विरोधी कानून लागू किया गया है। भाजपा का दावा है कि कांग्रेस युवाओं को गुमराह करने का प्रयास कर रही है और उसका विरोध लोकतांत्रिक अधिकार है। हालांकि कांग्रेस इस जवाब से संतुष्ट नहीं है। पार्टी का कहना है कि यदि सरकार के पास उपलब्धियां हैं तो उन्हें तथ्यों के साथ सामने रखा जाना चाहिए, न कि विरोध प्रदर्शनों और राजनीतिक आयोजनों के जरिए विमर्श को दूसरी दिशा में मोड़ा जाए। कांग्रेस नेताओं का आरोप है कि जनता अब रोजगार, महंगाई और शिक्षा जैसे मुद्दों पर स्पष्ट जवाब चाहती है। राजनीतिक विश्लेषकों की नजर में यह टकराव केवल राहुल गांधी के दौरे तक सीमित नहीं है। उत्तराखंड विधानसभा चुनाव 2027 नजदीक आने के साथ भाजपा और कांग्रेस दोनों युवाओं को अपने पक्ष में करने की रणनीति पर काम कर रहे हैं। भर्ती परीक्षाएं, पेपरलीक, रोजगार और पलायन जैसे मुद्दे चुनावी बहस के केंद्र में आते दिख रहे हैं। भाजपा का फोकस राहुल गांधी की विश्वसनीयता पर सवाल उठाने का है, जबकि कांग्रेस सरकार की जवाबदेही तय करने की कोशिश कर रही है। ऐसे में असली सवाल यही है कि चुनावी बहस का केंद्र पेपरलीक, बेरोजगारी और युवाओं का भविष्य रहेगा या फिर राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप और विरोध प्रदर्शन।

पेडों को काटने का विरोध करने वाले पांच लोगों पर मुकदमा दर्ज

संवाददाता

देहरादून। पेडों को काटने का विरोध करने पर पांच लोगों पर पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी।

प्राप्त जानकारी के अनुसार ऋषिकेश कोतवाली में तैनात एसआई शैलेन्द्र ममगाई ने ऋषिकेश कोतवाली में मुकदमा दर्ज कराते हुए बताया कि वह कानून व्यवस्था डयूटी मे मौजूद था, तो मौके पर शान्ति व्यवस्था डयूटी हेतू उ.नि. सुमित चौधरी चौकी प्रभारी श्यामपुर ऋषिकेश व उ. नि. अमित कुमार चौकी प्रभारी आईडीपीएल ऋषिकेश व कोतवाली ऋषिकेश से महिला उनि ज्योति, सिपाही पिकी भी शान्ति व्यवस्था डयूटी हेतू मौके पर उपस्थित आये थे। राष्ट्रीय राजमार्ग ऋषिकेश देहरादून मार्ग पर सडक चौडीकरण के लिये सडक के किनारे खडे पेडो की कटाई वन निगम के द्धारा की जा रही है। जो कि लगभग कई दिनो से चल रही है। पेडो की कटाई करने को लेकर कुछ महिला व पुरुषो के द्धारा विरोध प्रदर्शन किया जा रहा था।

विरोध प्रर्दशन करने वाले लोगो के द्धारा वन कर्मियो व मौके पर पेडो की कटाई कर रहे लोगो को काम करने से रोक दिया तथा कट रहे पेडो के सामने जाकर खडे हो गये जिन्हे बामुश्किल वहा से पुलिसगणो के द्धारा समझा बुझाकर हटाया गया तो उक्त लोगो मे से मानवी पुत्री अनुराग चन्द्र गुप्ता निवासी मझाडा गाव सहस्धारा थाना रायपुर, संगीता पुत्री मोहर सिह निवासी मझाडा सहस्रधारा, दीपा नेगी पुत्री धर्मपाल सिह नेगी निवासी लेन न0 20 गुमानीवाला श्यामपुर, दक्ष पुत्र कृष्ण कुमार निवासी मझाडा गांव थाना राजपुर, लोकेश द्विवेद्धी पुत्र गणेश दिवेद्धी निवासी मालसी पुलिया थाना रायपुर आदि 15-20 महिला पुरुष नाम पता अज्ञात के द्धारा राष्ट्रीय राजमार्ग देहरादून ऋषिकेश रोड पर काली माता मन्दिर के पास सडक पर खडे होकर वाहन रोक दिये जिससे राष्ट्रीय राजमार्ग अवरुद्ध हो गया था। तथा सडक के दोनो ओर वाहनो का जाम लग गया जिस कारण आम जनता को काफी कठिनाई का सामना करना पड रहा था बामुशिकल उक्त महिला व पुरुषो को राष्ट्रीय राजमार्ग से हटाया गया। तथा यातायात को सुचारु किया गया।

देहरादून सिटी डेवलपमेंट कोऑर्डिनेशन कमेटी के गठन की मांग

संवाददाता

देहरादून। दून में ऊंचे उगते कंक्रीट के जंगलों से सिमटती हरियाली और स्वच्छ पर्यावरण की जगह प्रदूषण की ओर बढ़ते इस शहर को स्मार्टसिटी बनाने में कमर कसे सरकारी विभागों में समन्वय के अभाव से बार-बार खुदती सड़कों, सीवर, ड्रेनेज योजनाओं की दुर्दशा,नदी नालों का चौक होना, सड़कों पर लगते ट्रैफिक जाम, फुटपाथों पर अतिक्रमण,पार्किंग स्थान की कमी आदि से दुखी संयुक्त नागरिक संगठन के वरिष्ठ नागरिकों के शिष्टमंडल ने अध्यक्ष ब्री. केजी बहल के नेतृत्व में जिलाधिकारी आशीष चौहान से मिलकर बताया समाधान व देहरादून सिटी डेवलपमेंट कोऑर्डिनेशन कमेटी के गठन का सुझाव, उन्होंने जिलाधिकारी को ही कमेटी का नोडल अधिकारी बनाया जाना भी उपयुक्त बताया है।

संगठन सचिव प्रदीप प्रदीप कुकरेती तथा सुशील त्यागी का कहना था की भारत सरकार द्वारा 9 साल पहले पूरे देश में जिला विकास समन्वय तथा अनुश्रवण समितियां गठित की गई थी जिनका

उद्देश्य केंद्र सरकार की योजनाओं के प्रभावी क्रियावन पर निगरानी रखना था। क्यों नहीं इसी तर्ज पर जनपद देहरादून में भी स्थानीय सार्वजनिक कार्यों को मानको के साथ त्वरित गति से समयबद्धता से पूरा कराया जा सकता है? लै.कर्नल बीएम थापा ने शहर में ट्रैफिक नियंत्रण और पार्किंग की अवस्थाओं का कारण तेजी से बढ़ती आबादी और वाहनों की संख्या बताते हुए इसके स्थाई समाधान हेतु सड़को पर एलिवेटेड रोड बनाने का सुझाव दिया।

वेस्ट वॉरियर्स के नवीन सडाना द्वारा प्रशासन से पूरे जिले में सख्ती से सिंगल यूज प्लास्टिक को बैन करने की मांग करते हुए इनके निर्माण,बिक्री,भंडारण और उपयोगकर्ताओं पर भारी जुर्माना लगाने की मांग की।

संगठन के कोऑर्डिनेटर राजीव घनसाली ने उत्तराखंड शहरी क्षेत्र विकास प्राधिकरण आदि विभागों द्वारा मोहकम्मपुर,लोअर नत्थनपुर,लोअर नेहरूग्राम आदि क्षेत्रों में सीवर व पेयजल लाइनों के डालने हेतु कराए गए खराब क्वालिटी के कार्यों की जांच कराकर यहां रुके पड़े अधूरे कार्यों को शीघ्र पूरा करने की मांग की।

संवाद में डॉ बृजमोहन शर्मा, उमेश्वरसिंह रावत,जगदीशजी बावला,डॉ अतुल गुप्ता,डॉ राकेश डंगवाल,स. हरकिशन सिंह, परमेंद्र बर्थवाल,पीएस बुटोला, एस एस गोसाई,मोहनसिंह खत्री, देवेंद्रपाल मोंटी, उमेश सक्सेना, ठा शेरसिंह, नवीन सडाना,हेमराज सिंह,सत्य प्रकाश चौहान आदि वरिष्ठ नागरिक शामिल थे।

रामनगर-देहरादून एक्सप्रेस रेल सेवा का शुभारंभ

◆मुख्यमंत्री एवं केंद्रीय रेल मंत्री ने किया वर्चुअल माध्यम से संयुक्त फ्लैग ऑफ

संवाददाता

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी एवं केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने शनिवार को वर्चुअल माध्यम से रामनगर-देहरादून एक्सप्रेस रेल सेवा का संयुक्त रूप से फ्लैग ऑफ कर नियमित संचालन का शुभारंभ किया। यह रेल सप्ताह में दो बार चलेगी। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने कहा कि यह नई रेल सेवा उत्तराखंड की विकास यात्रा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। यह केवल एक नई ट्रेन नहीं, बल्कि कुमाऊं और गढ़वाल मंडलों के बीच विकास, संपर्क और अवसरों की नई जीवनरेखा सिद्ध होगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय रेलवे आधुनिकता के नए युग में प्रवेश कर चुकी है। रेलवे सुरक्षा, गति, तकनीकी उन्नयन और यात्री सुविधाओं के क्षेत्र में अभूतपूर्व परिवर्तन हुए हैं। वंदे भारत और नमो भारत जैसी अत्याधुनिक 'मेड इन इंडिया' ट्रेनों ने भारत की तकनीकी क्षमता और आत्मनिर्भरता को नई पहचान दी है। उन्होंने कहा कि रेलवे अब हरित एवं अत्याधुनिक तकनीकों की दिशा में भी तेजी से आगे बढ़ रही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि केंद्र और राज्य सरकार के समन्वित प्रयासों से उत्तराखंड में सड़क, रेल, स्वास्थ्य, शिक्षा, डिजिटल कनेक्टिविटी तथा आधारभूत संरचना के क्षेत्र में तेजी से विकास कार्य हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि डबल इंजन सरकार के प्रयासों से विकास की गति दोगुनी हुई है और राज्य सरकार उत्तराखंड को देश का अग्रणी राज्य बनाने की दिशा में निरंतर कार्य कर रही है।

केंद्रीय रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय रेल देश के सर्वांगीण विकास का मजबूत आधार बन रही है। उन्होंने कहा कि उत्तराखंड में रेल संपर्क को सुदृढ़ करने के लिए केंद्र सरकार निरंतर कार्य कर रही है और नई रेल सेवाएं प्रदेश के आर्थिक विकास, पर्यटन और जनसुविधाओं को नई गति प्रदान करेंगी। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि रामनगर-देहरादून एक्सप्रेस क्षेत्रीय संपर्क को मजबूत करने के साथ-साथ आम नागरिकों के लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध होगी। अगर यात्रियों की संख्या बढ़ेगी तो इसे प्रतिदिन चलाया जायेगा उन्होंने कहा कि यह एक्सप्रेस गढ़वाल और कुमाऊं के लिए सेतु का कार्य करेगी। केन्द्रीय रेल मंत्री ने कहा कि उत्तराखण्ड से देश के विभिन्न हिस्सों को जोड़ने के लिए प्रमुख नई और विस्तसारित 20 रेल सेवाएं शुरू की गई। उन्होंने कहा कि उत्तराखण्ड के 11 रेलवे स्टेशनों का आधुनिकीकरण किया जा रहा है। उन्होंने राज्य में रेलवे के विस्तार के लिए पूरा सहयोग देने के लिए मुख्यमंत्री का आभार भी व्यक्त किया।

इस अवसर पर वर्चुअल माध्यम से हरिद्वार सांसद त्रिवेंद्र सिंह रावत, गढ़वाल सांसद अनिल बलूनी, विधायक दीवान सिंह बिष्ट, अरविंद पांडे और रेलवे के अधिकारी मौजूद थे।

मंदिरो में चोरी के मामले में भाजपा सरकार हिस्सेदार है: शैलजा

संवाददाता

देहरादून। कांग्रेस प्रदेश प्रभारी व सांसद कुमारी शैलेजा ने मंदिरो चोरी के मामले में कहा कि मंदिरो में चोरी के ममाले में भाजपा सरकार हिस्सेदार है, सरकार की नाक के नीचे चोरी हो गयी और इनका पता नहीं चला ऐसा कैसे हो सकता है?

आज यहां राजपुर रोड स्थित एक होटल में पत्रकारों से वार्ता करते हुए कुमारी शैलेजा ने कहा कि प्रदेश सरकार में सिस्टम फेल हो गया है। मंदिरो में चोरी हिन्दूओं की आस्था पर प्रहार है। सरकार की नाक के नीचे से मंदिरो में चोरी हो गयी जिससे यह साफ है कि इसमें सरकार की हिस्सेदारी तय है।

कुमारी शैलेजा ने कहा कि विपक्ष आवाज नहीं उठायेगा तो क्या करेगा। विपक्ष की भी जिम्मेदारी है वह सरकार की गलत निर्णयों पर आवाज उठायेगा। संकल्प परिवर्तन यात्रा पर कुमारी शैलेजा ने कहा कि वह संकल्प परिवर्तन यात्रा में जन-जन के पास जाकर जागरूकता अभियान चलायेंगे और भाजपा सरकारी की कारगुजारियों को जनता के सामने रखेंगे।

एक सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि कांग्रेस चुनाव के लिए तैयार है और आने वाले समय में उत्तराखण्ड में कांग्रेस की सरकार होगी। उन्होंने कहा कि भाजपा के साथ जहां चुनाव आयोग है तो उनके पास जनता की ताकत है। इस अवसर पर प्रदेश अध्यक्ष गणेश गोदियाल, विधायक प्रीतम सिंह, करण माहरा, काजी निजामुददीन भी मौजूद थे।

मासूम की करंट लगने से मौत!

हमारे संवाददाता

उधमसिंहनगर। पंतनगर विश्वविद्यालय परिसर स्थित नगला डेयरी कॉलोनी में एक दर्दनाक हादसे में 14 वर्षीय छात्र की करंट लगने से मौत हो गई। घर में खेलते समय स्टैंडिंग पंखे में उतरे करंट की चपेट में आने से उसकी जान चली गई। घटना के बाद परिवार गहरे सदमे में है, जबकि क्षेत्र में शोक का माहौल बना हुआ है।

जानकारी के अनुसार, पंतनगर विश्वविद्यालय परिसर स्थित नगला डेयरी कॉलोनी निवासी अंगद सिंह विश्वविद्यालय के शैक्षणिक डेयरी फार्म में ठेका कर्मी के रूप में कार्यरत हैं। उनका 14 वर्षीय पुत्र आदित्य सिंह स्थानीय विद्यालय में कक्षा आठ का छात्र था। बताया जा रहा है कि विगत शाम करीब चार बजे आदित्य घर में खेल रहा था। इसी दौरान कमरे में रखा स्टैंडिंग विद्युत पंखा अचानक उसके ऊपर गिर गया। पंखे में करंट उतरने के कारण वह गंभीर रूप से झुलस गया और मौके पर ही अचेत होकर गिर पड़ा।

परिजन तुरंत उसे पंतनगर विश्वविद्यालय अस्पताल लेकर पहुंचे। वहां प्राथमिक उपचार के बाद उसकी गंभीर हालत को देखते हुए रुद्रपुर के एक निजी अस्पताल रेफर किया गया, लेकिन चिकित्सकों ने जांच के बाद उसे मृत घोषित कर दिया। बेटे की मौत की खबर सुनते ही परिवार पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा। घर में चीख-पुकार मच गई और आसपास के लोग भी सांत्वना देने पहुंच गए। घटना की सूचना मिलते ही क्षेत्र में शोक की लहर फैल गई।

नाबालिग से दुष्कर्म व मारपीट के आरोप मे 6 गिरफ्तार

हमारे संवाददाता

हरिद्वार। जंगल में लड़की से दुष्कर्म व उसके साथी लड़के से मारपीट के मामले में पुलिस ने त्वरित कार्यवाही करते हुए मामले में शामिल छह लोगों को गिरफ्तार कर लिया है।

बता दें कि बीती 12 जुलाई की रात 3 लडके सुल्तानपुर लक्सर से एक मोटरसाइकिल पर एक लड़की को लेकर फुलगढ के जंगल की तरफ आये ओर एक लडके व लडकी को जंगल के पास छोड कर वापस सुल्तानपुर चले गये। जंगल के पास पहले से ही 3 लडके शराब पी रहे थे। लड़का व लड़की को जंगल में देखकर शराब पी रहे 3 लड़कों ने फोन कर 3 लडके ओर बुला लिये। जिसके बाद सभी लड़के , लड़की व लडके के पीछे अन्दर जंगल में चले गए

और 4 लडको ने लड़के को पकड़ कर उसके साथ मारपीट की। 2 अन्य लडके लडकी को पकड़ कर जंगल में ओर अन्दर ले गये। जहां पर मुख्य आरोपी महेश उर्फ मंत्री ने लडकी के साथ दुष्कर्म किया। लड़की से बलात्कार करने के बाद दोनों लडके लडकी को जंगल में छोड़कर भाग गये।

मामले में 13 जुलाई को परिजनों की शिकायत के आधार पर पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी गयी। जांच के दौरान पुलिस टीम ने एफ.एस.एल. टीम को बुलाकर वैज्ञानिक साक्ष्य एकत्रित किए गए।

मामले में पुलिस ने एक सूचना के आधार पर बीती रात फुलगढ के जंगल में दबिश देकर 6 आरोपियों को हिरासत में लिया गया। सभी आरोपियों से सख्ती से पूछताछ की गयी तो संदिग्धों ने लडकी के साथ हुई घटना को स्वीकार किया। जिस पर पुलिस ने सभी आरोपियों को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया जहां से उन्हे जेल भेज दिया गया है। गिरफ्तार आरोपियों के नाम मोहित कुमार पुत्र प्रीतम सिंह, सुमित पुत्र राकेश, आशु पुत्र सुभाष, शुभम पुत्र बीरबल, महेश उर्फ मंत्री पुत्र कृपाल, आकाश पुत्र जसमाल समस्त निवासी ग्राम फुलगढ थाना पथरी जनपद हरिद्वार बताये जा रहे है।

4 करोड़ की फिरौती मामले में एसएचओ गिरफ्तार

हमारे संवाददाता

चंडीगढ़। पंजाब के जिला होशियारपुर के टांडा थाना के एसएचओ गुरिन्द्रजीत सिंह नागरा को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। आरोप है कि नागरा पर अमेरिका में एफबीआई के ऑपरेशन हार्ड बॉल में एक परिवार से 4 करोड़ रुपए मांगने का मामला है। केस में नाम आने के बाद एसएचओ को लाइन हाजिर भी किया गया था। एफबीआई द्वारा चलाए गए ऑपरेशन हार्ड बॉल में लॉरेंस और जग्गू भगवानपुरिया जैसे गैंगस्टरों के अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क में नागरा का नाम भी फिरौती मांगने में आया था। पुलिस की जांच के बाद बीती देर रात इंस्पेक्टर नागरा के खिलाफ एक्सटॉर्शन और करप्शन एक्ट के तहत मामला दर्ज किया गया।

जानकारी के अनुसार बीती 10 जुलाई को अमेरिका और कनाडा की जांच एजेंसियों ने जॉइंट आपरेशन में अमेरिका, कनाडा और यूरोप में गैंगस्टर नेटवर्क की जांच की। इसी दौरान जब कैलिफोर्निया में गैंगस्टर जग्गू भगवानपुरिया के नेटवर्क के खिलाफ चल रही जांच के दौरान भारतीय पुलिस अधिकारी के नाम का जिक्र सामने आया। अमेरिकी एजेंसियों ने आरोप लगाया था कि पंजाब के एक एसएचओ ने गैंग नेटवर्क के साथ मिलकर एक अमेरिकी परिवार से 4 लाख डॉलर की कथित फिरौती मांगने की कोशिश की। जिसका नाम गुरिंदरजीत सिंह नागरा है। उसकी फोटो भी गैंगस्टरों के साथ जारी की गई। अमेरिका में रह रहे रिटायर एएसआई चरनजीत सिंह ने शिकायत में कहा था कि 15 जनवरी 2026 की शाम करीब 4 बजे होशियारपुर के टांडा के गांव मियाणी में तीन बाइक सवार हमलावरों ने आप कार्यकर्ता और हार्डवेयर कारोबारी बलविंदर सिंह सतकरतार की गोली मारकर हत्या कर दी थी। टांडा पुलिस ने हत्या का केस दर्ज कर जांच शुरू की। वारदात के कुछ समय बाद सोशल मीडिया पर एक पोस्ट वायरल हुई। 24 मई 2026 को तत्कालीन एसएचओ गुरिंदरजीत सिंह नागरा ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर दावा किया कि पूछताछ में सामने आया है कि हत्या पारिवारिक रंजिश में करवाई गई। पुलिस के मुताबिक, अमेरिका में रह रहे रिटायर्ड एएसआई और मृतक के समधी चरनजीत सिंह ने अपनी बेटी के तलाक के मामले की रंजिश में शूटरों को सुपारी दिलवाई।

आरोप है कि गैंगस्टर जग्गू भगवानपुरिया के नेटवर्क से जुड़े लोगों ने अमेरिका में रह रहे परिवार की जानकारी जुटाकर भारत में अपने कॉन्टैक्ट तक पहुंचाई और फिर इस केस का दबाव बनाकर पैसे मांगने की कोशिश की। अमेरिकी अटॉर्नी बिलाल ए. एसायली ने आरोप लगाया कि इस पूरे घटनाक्रम में भारत के कुछ पुलिस अधिकारियों की भी भूमिका थी। आरोपों में तत्कालीन एसएचओ गुरिंदरजीत सिंह नागरा का नाम भी शामिल है।

आर.एन.आई.- 59626/94

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक श्रीमती पुष्पा कांति कुमार द्वारा दिग्विजय सिनेमा बिल्डिंग घंटाघर, देहरादून से प्रकाशित तथा अवि प्रिंटर्स 21 ईसी रोड, देहरादून से मुद्रित।

प्रधान संपादक
कांति कुमार

संपादक
पुष्पा कांति कुमार

समाचार संपादक
आनंद कांति कुमार

कानूनी सलाहकार:
वी के अरोड़ा, *एडवोकेट*
बैजनाथ, *एडवोकेट*

कार्यालय: दिग्विजय सिनेमा बिल्डिंग देहरादून।
मो. 9358134808

नोट: सभी विवादों के लिये देहरादून न्यायालय ही मान्य होगा, प्रकाशित सामग्री के लिए प्रिंटर्स की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।